INFUSION NOTES
WHEN ONLY THE BEST WILL DO

LATEST EDITION

पेपर-1

राजस्थान जूनियर अकाउंटेंट

(कनिष्ठ लेखाकार एवं T.R.A. भर्ती परीक्षा)

HANDWRITTEN NOTES

भाग -2 राजस्थान का इतिहास + संस्कृति + भूगोल

INFUSION NOTES

WHEN ONLY THE BEST WILL DO

राजस्थान

जूनियर अकाउंटेंट

(कनिष्ठ लेखाकार एवं TRA परीक्षा हेतु)

पेपर – 1

भाग – 2

राजस्थान का इतिहास + संस्कृति + भूगोल

प्रस्तावना

*प्रिय पाठकों, प्रस्तुत नोट्स "**राजस्थान जूनियर अकाउंटेंट (कनिष्ठ लेखाकार एवं TRA भर्ती परीक्षा हेतु)**" को एक विभिन्न अपने अपने विषयों में निपुण अध्यापकों एवं सहकर्मियों की टीम के द्वारा तैयार किया गया है / ये नोट्स पाठकों को **"राजस्थान लोक सेवा आयोग"** द्वारा आयोजित करायी जाने वाली परीक्षा **"राजस्थान जूनियर अकाउंटेंट (कनिष्ठ लेखाकार एवं TRA)" की** परीक्षा में पूर्ण संभव मदद करेंगें* **/**

अंततः सतर्क प्रयासों के बावजूद नोट्स में कुछ कमियों तथा त्रुटियों के रहने की संभावना हो सकती हैं / अतः आप सूचि पाठकों का सुझाव सादर आमंत्रित हैं/

प्रकाशकः

INFUSION NOTES

जयपुर, 302029 (RAJASTHAN)

मो : 9887809083

ईमेल : contact@infusionnotes.com

वेबसाइट : http://www.infusionnotes.com

WhatsApp करें - https://wa.link/3ewvb9

Online Order करें - https://shorturl.at/dlvHQ

मूल्य : ₹	**संस्करण : नवीनतम**

	राजस्थान का इतिहास	
क्र. सं.	अध्याय	पेज नंबर
1.	राजस्थान इतिहास के स्रोत	1
2.	प्रागैतिहासिक स्थल (सभ्यताएं) • पाषाणकालीन सभ्यता	21
3.	ऐतिहासिक राजस्थान • महत्वपूर्ण ऐतिहासिक केंद्र	31
4.	प्रमुख राजवंशों के महत्वपूर्ण शासकों की राजनीतिक एवं सांस्कृतिक उपलब्धियां • गुर्जर प्रतिहार वंश • गुहिल वंश • चौहान वंश का इतिहास • राजस्थान के परमार वंश • मारवाड़ का इतिहास • राठौड़ वंश • कछवाहा राजवंश • बीकानेर के वंशज	38
5.	मध्यकालीन राजस्थान में प्रशासनिक तथा राजस्व व्यवस्था	98

6.	आधुनिक राजस्थान • राजस्थान में 1857 की क्रांति में हुए प्रमुख विद्रोह • राजस्थान में प्रचलित विभिन्न सामाजिक कुरुतियाँ • सामाजिक और सांस्कृतिक मुद्दे • राजस्थान राजनीतिक संगठन व समाचार पत्र • राज्य की सामाजिक एवं राजनीतिक संस्थाएं	114
7.	राजस्थान में राजनैतिक जागरण	132
8.	राजस्थान में किसान एवं जनजाति आंदोलन	138
9.	विभिन्न देशी रियासतों में प्रजामण्डल आंदोलन	148
10.	राजस्थान का एकीकरण	161
	राजस्थान की कला संस्कृति	
1.	राजस्थान की वास्तु परम्परा • मंदिर • किले एवं महल • राजस्थान की प्रमुख छत्तरियाँ • राजस्थान की प्रमुख हवेलियाँ	166

2.	चित्रकला की विभिन्न शैलियाँ और हस्तशिल्प	202
3.	प्रदर्शन कला • शास्त्रीय संगीत • राजस्थान के प्रमुख लोकगीत • राजस्थान के प्रमुख नृत्य • प्रमुख लोक वाद्य यंत्र • राजस्थान के लोक नाट्य	222
4.	भाषा एवं साहित्य • राजस्थान की बोलियाँ एवं साहित्य	258
5.	धार्मिक जीवन • राजस्थान में संत एवं सम्प्रदाय	271
6.	राजस्थान के लोक देवी - देवता	281
7.	राजस्थान में सामाजिक जीवन मेले एवं त्यौहार	291
8.	सामाजिक रीति रिवाज, परम्पराएँ	303
9.	वेशभूषा एवं आभूषण	308
10.	राजस्थान के प्रमुख व्यक्तित्व	312

<u>राजस्थान का भूगोल</u>

क्र. सं	अध्याय	पेज न.
1.	सामान्य परिचय	325
2.	प्रमुख भू – आकृतिक प्रदेश एवं उनकी विशेषताएँ	343
3.	जलवायु की विशेषताएं	356
4.	प्रमुख नदियाँ एवं झीले	366
5.	प्राकृतिक वनस्पति	387
6.	मृदा	396
7.	प्रमुख फसलें	401
8.	राजस्थान में पशुपालन	413
9.	प्रमुख उद्योग	420
10.	प्रमुख सिंचाई परियोजनाएँ एवं जल संरक्षण तकनीकें	423
11.	जनसंख्या – वृद्धि, घनत्व, साक्षात्कार, लिंगानुपात	433
12.	प्रमुख जनजातियाँ	440
13.	खनिज – धात्विक एवं अधात्विक	443
14.	ऊर्जा संसाधन – परम्परागत एवं ग़ैर परम्परागत	457

15.	जैव विविधता एवं इनका संरक्षण	468
16.	पर्यटन स्थल एवं परिपथ	472

अध्याय – 2
प्रागैतिहासिक स्थल (सभ्यताएं)

- **पाषाणकालीन सभ्यता**

I. बागौर (भीलवाड़ा)

प्रिय छात्रों किसी भी सभ्यता का विकास किसी नदी के किनारे होता है क्योंकि जल ही जीवन है जल की आवश्यकता खेती के लिए और अन्य उपयोगों के लिए की पड़ती है।

- इसी प्रकार भीलवाड़ा जिले की माण्डल तहसील में कोठारी नदी के तट पर स्थित इस पुरातात्विक स्थल का उत्खनन 1967-68 से 1969-70 की अवधि में राजस्थान राज्य पुरातत्व विभाग एवं दक्कन कॉलेज, पुणे के तत्त्वावधान में श्री वी.एन. मिश्र एवं डॉ. एल.एस. लेशनि के नेतृत्व में हुआ है
- यहाँ से मध्य पाषाणकालीन (Mesolithic) लघु पाषाण उपकरण व वस्तुएँ (Microliths) प्राप्त हुई हैं।
- बागौर के उत्खनन में प्राप्त प्रस्तर उपकरण काल विभाजन के क्रम से तीन चरणों में विभाजित किये गये हैं। प्रथम चरण 3000 वर्ष ईसा पूर्व से लेकर 2000 वर्ष ईसा पूर्व तक, द्वितीय चरण 2000 वर्ष ईसा पूर्व से 500 वर्ष ईसा पूर्व का एवं तृतीय चरण 500 वर्ष ईसा पूर्व से लेकर प्रथम ईस्वी सदी तक की मानव सभ्यता की कहानी कहता है ।
- इन पाषाण उपकरणों को **स्फटिक** (Quartz) एवं चर्ट पत्थरों से बनाया जाता था। इनमें मुख्यतः पृथुक (Flake), फलक (Blade) एवं अपखण्ड (Chip) बनाये जाते थे। ये उपकरण आकार में बहुत छोटे (लघु अश्म उपकरण-Microliths) थे।
- बागौर में उत्खनन में पाषाण उपकरणों के साथ-साथ एक मानव कंकाल भी प्राप्त हुआ है।
- यहाँ पाये गये लघु पाषणा उपकरणों में ब्लेड, छिद्रक, स्क्रेपर, बेधक एवं चांद्रिक आदि प्रमुख हैं।
- ये पाषाण उपकरण चर्ट, जैस्पर, चाल्डेसनी, एगेट, क्वार्टजाइट, फ्लिंट जैसे कीमती पत्थरों से बनाये जाते थे। ये आकार में बहुत छोटे आधे से पौने इंच के औजार थे ये छोटे उपकरण संभवतः किसी लकड़ी या हड्डी के बड़े टुकड़ों पर आगे लगा दिये जाते थे।
- इन्हें मछली पकड़ने, जंगली जानवरों का शिकार करने, छीलने, छेद करने आदि कार्यों में प्रयुक्त किया जाता था। इन उपकरणों से यहाँ के लोगों का मुख्य व्यवसाय आखेट करना एवं कंद-मूल फल एकत्रित करने की स्थिति पर प्रकाश पड़ता हैं।
- यहाँ के प्रारंभिक स्तरों पर घर या फर्श के अवशेष नहीं मिलना साबित करता है कि यहाँ का मानव घुमक्कड़ जीवन जीता होगा।
- बागौर में द्वितीय चरण के उत्खनन में केवल 5 ताम्र उपकरण मिले हैं, जिसमें एक सूई (10.5 सेमी लम्बी), एक कुन्ताग्र (Spearhead), एक त्रिभुजाकार शस्त्र, जिसमें दो छेद हैं, प्रमुख हैं ।
- इस चरण के उत्खनन में मकानों के अवशेष भी मिले हैं जिससे पुष्टि होती है कि इस समय मनुष्य ने एक स्थान पर स्थायी जीवन जीना प्रारम्भ कर दिया था।
- इस काल की प्राप्त हड्डियों में गाय, बैल, मृग, चीतल, बारहसिंघा, सूअर, गीदड़, कछुआ आदि के अवशेष मिले हैं।
- कुछ जली हुई हड्डियाँ व मांस के भुने जाने के प्रमाण मिलने से अनुमान है कि इस काल का मानव मांसाहारी भी था तथा कृषि करना सीख चुका था।
- उत्खनन के तृतीय चरण में हड्डियों के अवशेष बहुत कम होना स्पष्ट करता है कि इस काल (500 ई. पूर्व से ईसा की प्रथम सदी) में मानव संस्कृति में कृषि की प्रधानता हो गई थी ।
- **बागौर उत्खनन** में कुल **5 कंकाल** प्राप्त हुए हैं, जिनसे स्पष्ट होता है कि शव को दक्षिण पूर्व-उत्तर पश्चिम में लिटाया जाता था तथा उसकी टांगे मोड़ दी जाती थी।
- सभ्यता के तृतीय चरण में शव को उत्तर-दक्षिण में लिटाने एवं टांगे सीधी रखने के प्रमाण मिले हैं।
- शव को मोती के हार, ताँबे की लटकन, मृद्भाण्ड, मांस आदि सहित दफनाया जाता था। खाद्य पदार्थ व पानी हाथ के पास रखे जाते थे तथा अन्य वस्तुएँ आगे-पीछे रखी जाती थी।
- तृतीय चरण के एक कंकाल पर ईंटों की दीवार भी मिली है, जो समाधि बनाने की द्योतक है। मिट्टी के बर्तन यहाँ के द्वितीय चरण एवं तृतीय चरण के उत्खनन में मिले हैं।
- द्वितीय चरण के मृद्भाण्ड मटमैले रंग के, कुछ मोटे व जल्दी टूटने वाले थे। इनमें शरावतनें, तश्तरियाँ, कटोरे, लोटे, थालियाँ, तंग मुँह के घड़े व बोतलें आदि मिली हैं। (ये मृद्भाण्ड रेखा वाले तो थे परन्तु इन पर अलंकरणों का अभाव था।
- ऊपर से लाल रंग लगा हुआ है। ये सभी हाथ से बने हुए हैं) (तृतीय चरण के मृद्भाण्ड पतले एवं टिकाऊ हैं तथा चाक से बने हुए हैं। इन पर रेखाओं के अवशेष मिले हैं, परन्तु अलंकरण बहुत कम मिले हैं।
- (आभूषण: बागौर सभ्यता में मोतियों के आभूषण तीनों स्तरों के उत्खनन में प्राप्त हुए हैं। हार तथा कान की लटकनों में मोती बहुतायत से प्रयुक्त किये जाते थे।
- ये मोती एगेट, इन्द्रगोप व काँच के बने होते थे। मकान : बागौर में मकानों के अवशेष द्वितीय एवं तृतीय चरण में प्राप्त हुए हैं। हार तथा कान की लटकनों में मोती बहुतायत से प्रयुक्त किये जाते थे। ये मोती एगेट, इन्द्रगोप व काँच के बने होते थे।)

- ***मकान : बागौर में मकानों के अवशेष द्वितीय एवं तृतीय चरण*** में प्राप्त हुए हैं। मकान पत्थर के बने हैं। फर्श में भी पत्थरों को समतल कर जमाया जाता था।
- बागौर में मध्यपाषाणकालीन पुरावशेषों के अलावा लौह युग के उपकरण भी प्राप्त हुए हैं। इस सभ्यता के प्रारंभिक निवासी आखेट कर अपना जीवन यापन करते थे। परवर्ती काल में वे पशुपालन करना सीख गये थे। बाद में उन्होंने कृषि कार्य भी सीख लिया था।

कांस्ययुगीन सभ्यताएं -

2. *कालीबंगा की सभ्यता -*

कालीबंगा की सभ्यता एक नदी के किनारे बसी हुई थी । नदी का नाम है – ***सरस्वती नदी*** । इसे ***दृषनदी, मृतनदी, नटनदी*** के नाम से भी जानते हैं। यह सभ्यता हनुमानगढ़ जिले में विकसित हुई थी हनुमानगढ़ जिले में एक अन्य सभ्यता जिसे ***पीलीबंगा*** की सभ्यता कहते हैं विकसित हुई।

इस सभ्यता की खोज -

- इस सभ्यता की सबसे पहले जानकारी देने वाले एक पुरातत्ववेत्ता एवं भाषा शास्त्री एल.पी. टेस्सिटोरी थे। इन्होंने ही इस सभ्यता के बारे में सबसे पहले परिचय दिया लेकिन इस सभ्यता की तरफ किसी का पूर्णरूप से ध्यान नहीं था इसलिए इसकी खोज नहीं हो पाई।
- इस सभ्यता के खोजकर्ता ***अमलानंद घोष*** है। इन्होंने 1952 में सबसे पहले इस सभ्यता की खोज की थी।
- इनके बाद में इस सभ्यता की खोज दो अन्य व्यक्तियों के द्वारा भी की गई थी जो 1961 से 1969 तक चली थी।

1. ***बृजवासीलाल (बी.बी. लाल)***
2. ***बीके (बालकृष्ण) थापर***

इन्हीं दोनों ने इस सभ्यता की विस्तृत रूप से खोज की थी

एल.पी. टेस्सिटोरी के बारे में –

- ये इटली के के निवासी थे । इनका जन्म सन् 1887 में हुआ। और यह अप्रैल 1914 ईस्वी में भारत मुंबई आए । जुलाई 1914 में यह जयपुर (राजस्थान) आये । बीकानेर राज्य इनकी कर्म स्थली रहा है ।
- उस समय के तत्कालीन राजा महाराजागंगा सिंह जी ने इन्हें अपने राज्य के सभी प्रकार के चारण साहित्य लिखने की जिम्मेदारी दी ।
- बीकानेर संग्रहालय भी इन्होंने ही बनवाया है ये एक भाषा शास्त्री एवं पुरातत्ववेत्ता थे उन्होंने राजस्थानी भाषा के दो प्रकार बताए थे।

1. पूर्वी राजस्थानी 2. पश्चिमी राजस्थानी

- इस सभ्यता का कालक्रम ***कार्बन डेटिंग पद्धति*** के अनुसार 2350 ईसा पूर्व से 1750 ईसा पूर्व माना जाता है।
- कालीबंगा शब्द "सिंधीभाषा" का एक शब्द है जिसका शाब्दिक अर्थ होता है – ***"काले रंग की चूड़िया"***। इस स्थल से काले रंग की चूड़ियों के बहुत सारी ढेर प्राप्त हुए इसलिए इस सभ्यता को कालीबंगा सभ्यता नाम दिया गया।
- कालीबंगा की सभ्यता भारत की ऐसी पहली सभ्यता स्थल है जो ***स्वतंत्रता के बाद खोजी*** गई थी। यह एक ***कांस्य युगीन सभ्यता*** है।
- हनुमानगढ़ जिले से इस सभ्यता से संबंधित जो भी वस्तुएं प्राप्त हुई हैं उनको सुरक्षित रखने के लिए राजस्थान सरकार के द्वारा ***1985-86 में कालीबंगा संग्रहालय*** की स्थापना की गई थी । यह संग्रहालय ***हनुमानगढ़*** जिले में स्थित है।

इस सभ्यता की विशेषताएँ –

- इस सभ्यता की सड़कें एक दूसरे को ***समकोण*** पर काटती थी । इसलिए यहाँ पर मकान बनाने की पद्धति को ***"ऑक्सफोर्ड पद्धति"*** कहते हैं। इसी पद्धति को ***'जाल पद्धति, ग्रीक, चेम्सफोर्ड पद्धति'*** के नाम से भी जानते हैं।
- मकान कच्ची एवं पक्की ईंट के बने हुए थे, आरम्भ में ये कच्ची ईंटें थीं इसलिए इस सभ्यता को दीन हीन सभ्यता भी कहते हैं । इन ईंटों का आकार 30×15×7.5 है ।
- इन मकानों की खिड़की एवं दरवाजे पीछे की ओर होते थे ।
- यहाँ पर जो नालियां बनी हुई थी वह लकड़ी (काष्ठ) की बनी होती थी। आगे चलकर इन्हीं नालियों का निर्माण पक्की ईंटों से होता था । (विश्व में एकमात्र ऐसा स्थान जहां लकड़ियों की बनी नालियाँ मिली हैं वह कालीबंगा स्थल है) ***(परीक्षा की दृष्टि से महत्त्वपूर्ण)***
- विश्व की प्राचीनतम ***जुते हुए खेत*** के प्रमाण इसी सभ्यता से मिले हैं।
- यहाँ पर मिले हुए मकानों के अंदर की दीवारों में दरारें मिलती हैं इसलिए माना जाता है कि विश्व में प्राचीनतम भूकंप के प्रमाण यहीं से प्राप्त होते हैं।
- यहाँ के लोग एक साथ में ***दो फसलें*** करते थे अर्थात् फसलों के होने के प्रमाण भी यहीं से मिलते हैं ***जौं और गेहूं।***
- यहाँ पर उत्खनन के दौरान ***यज्ञकुंड / अग्नि वेदिकाएं*** प्राप्त हुए हैं यहाँ के लोग ***बलिप्रथा*** में भी विश्वास रखते थे।
- इस सभ्यता का पालतू जीव ***कुत्ता*** था। इस सभ्यता के लोग ***ऊँट*** से भी परिचित थे इसके अलावा ***गाय, भैंस, बकरी, घोड़ा से*** भी परिचित थे ।
- विश्व में प्राचीनतम् नगर के प्रमाण यहीं पर मिले हैं इसलिए इसे ***नगरीय सभ्यता*** भी कहते हैं यहाँ पर मूर्तिपूजा, देवी / देवता के पूजन, चित्रांकन या मूर्ति का कोई प्रमाण नहीं मिला है।
- यहाँ पर समाधि प्रथा का प्रचलन था । यहाँ पर ***समाधि तीन प्रकार*** की मिलती हैं अर्थात् तीन प्रकार से मृतक का अंतिम संस्कार किया जाता था
- अंडाकार गड्डा खोदकर व्यक्ति को दफनाना । इस गड्डे में व्यक्ति का सिर उत्तर की ओर पैर दक्षिण की ओर होते थे ।

INFUSION NOTES WHEN ONLY THE BEST WILL DO

- अंडाकार गड्ढा खोदकर व्यक्ति को तोड़ मरोड़ कर इकट्ठा करके दफनाना ।
- एक गड्ढा खोदकर व्यक्ति के साथ आभूषण को दफनाना ।
- **स्वास्तिक चिह्न** का प्रमाण इसी कालीबंगा सभ्यता से प्राप्त होता है इस स्वास्तिक चिह्न का प्रयोग यहाँ के लोग वास्तुदोष को दूर करने के लिए करते थे ।
- कालीबंगा की सभ्यता और मेसोपोटामिया की सभ्यता की **समानता** के प्रमाण **बेलनाकार बर्तन** में मिलते हैं।
- यहाँ पर एक **कपाल** मिला है **जिसमें छः प्रकार के छेद** थे। जिससे अनुमान लगाया जाता है कि यहाँ के लोग **शल्य चिकित्सा** से परिचित थे अर्थात् शल्य चिकित्सा के प्राचीनतम प्रमाण इसी सभ्यता से मिले हैं ।
- यहाँ पर एक सिक्का प्राप्त हुआ है जिसके एक और स्त्री का चित्र है तथा दूसरी ओर **चीता** का चित्र बना हुआ है अर्थात् अनुमान लगाया जा सकता है कि यहाँ पर परिवार की **मातृसत्तात्मक प्रणाली** का प्रचलन था।
- कालीबंगा सभ्यता को सिंधु सभ्यता की **तीसरी राजधानी** कहा जाता है।
- कालीबंगा सभ्यता में पुरोहित का प्रमुख स्थान होता था।
- इस सभ्यता के लोग मध्य एशिया से व्यापार करते थे, इसका प्रमाण **सामूहिक तंदूर** से मिलता है क्योंकि तंदूर मध्य-एशिया से संबंधित है।
- इस सभ्यता के भवनों का **फर्श सजावट** एवं अलंकृत के रूप में मिलता है।

कालीबंगावासियों का सामाजिक जीवन

- उत्खनन से अनुमान लगाया जाता है कि कालीबंगा के समाज में धर्मगुरु (पुरोहित), चिकित्सक, कृषक, कुंभकार, बढ़ई, सुनार, दस्तकार, जुलाहे, ईंट एवं मनके निर्माता, मुद्रा (मोहरें) निर्माता, व्यापारी आदि धन्धों के लोग निवास करते थे।
- कालीबंगा वासियों के नागरिक जीवन में त्यौहार एवं धार्मिक उत्सवों का पर्याप्त महत्त्व था। इसके साथ ही खिलौने, पासे, मत्स्य काँटे आदि के अवशेषों से अनुमान है कि इनके जीवन में मनोरंजन का पर्याप्त महत्व था। संभवतः ये **शाकाहारी एवं मांसाहारी** दोनों होते थे। खाद्य सामग्रियों में फल, फूल, दूध, दही, जौं, गेहूँ, मांस आदि का प्रयोग होता था।

मृतक संस्कार :

कालीबंगा के निवासियों की **तीन प्रकार** की **समाधियाँ (कब्रें)** मिली हैं ।

- शवों को अण्डाकार गड्ढे में उत्तर की ओर सिर रखकर मृत्यु संबंधी उपकरणों के साथ गाड़ते थे।
- दूसरे प्रकार की समाधियों में **शव की टाँगे समेटकर** गाड़ा जाता था।
- तीसरे प्रकार में शव के साथ बर्तन और एक-एक सोने व मणि के दाने की माला से विभूषित कर गाड़ा जाता था।
- उत्खनन में जो शवाधान प्राप्त हुए हैं उनसे यह स्पष्ट हो जाता है कि वे मृत्युपरांत किसी न किसी प्रकार का विश्वास अवश्य रखते थे, क्योंकि मृतकों के साथ खाद्य सामग्री, आभूषण, मनके, दर्पण तथा विभिन्न प्रकार के मदभाण्ड आदि रखे जाते थे।
- यहाँ मोहनजोदड़ो की भाँति लिंग, मातृशक्ति आदि की **मूर्तियाँ** नहीं मिली है, जिससे यहाँ के निवासियों की धार्मिक भावना का पता नहीं चल पाया है। यहाँ की **लिपि दाँये से बाँये** लिखी प्रतीत होती है साथ ही अक्षर एक-दूसरे के ऊपर खुदे हुए प्रतीत होते हैं।

आर्थिक जीवन :

- कालीबंगा के भग्नावशेषों से अनुमान लगाया जा सकता है कि अधिकांश लोगों का जीवन सामान्य रूप से समृद्ध था। सुख एवं समृद्धि के लिए लोगों ने विभिन्न साधनों का उपयोग किया था।
- कालीबंगा के निवासी कौन-कौन से पशु पालते थे, इसका ज्ञान हमें पशुओं के अस्थि अवशेषों, मृद पात्रों पर किये गये चित्रांकनों, मुद्रांकनों तथा खिलौनों से होता है। ये भेड़-बकरी, गाय, भैंस, बैल, भैंसा तथा सुअर आदि पशुओं को पालते थे। कालीबंगा के निवासी ऊँट भी पालते थे। कुत्ता भी उनका पालतू जीव था ।
- **सरस्वती दृषद्वती नदियों** द्वारा लाई जाने वाली मिट्टी कृषि जन्य उत्पादों के लिए बहुत उपजाऊ थी। इसमें वे जौं और गेहूँ की खेती करते थे। हल लकड़ी के रहे होंगे। सिंचाई के लिए नदी जल एवं वर्षा पर निर्भर थे। कालीबंगा के कृषक निश्चय ही 'अतिरिक्त उत्पादन' करते थे।
- हड़प्पा सभ्यता के नगरों को समृद्धि का प्रमुख कारण व्यापार एवं वाणिज्य था। यह जल एवं स्थल दोनों मार्गों से होता था। **लोथल (गुजरात)** इस सभ्यता में तत्कालीन युग का एक महत्त्वपूर्ण **सामुद्रिक व्यापारिक** केन्द्र था।
- कालीबंगा से मुख्यतः हड़प्पा संस्कृति के मुख्य केन्द्रों को अनाज, मनके तथा ताँबा भेजा जाता था।
- ताँबे का प्रयोग, अस्त्र-शस्त्र तथा दैनिक जीवन में उपयोग आने वाले उपकरण, बर्तन एवं आभूषण बनाने में होता था ।
- स्थानीय उद्योग पर्याप्त विकसित थे। कुंभकार का **मृदभाण्ड उद्योग** अत्यन्त विकसित था।
- वह विभिन्न प्रकार के मृदभाण्ड चाक पर बनाता था, जिन्हें भट्टों में अच्छी तरह पकाया जाता था। मृद्भाण्डों में मुख्यरूप से मर्तबान, कलश, बीकर, टस्तरियाँ, प्याले, टोंटीदार बर्तन, डिंद्रित भाण्ड एवं थालियाँ शामिल हैं। हस्त निर्मित कुछ बड़े मृदभाण्ड भी प्राप्त हुए हैं जो संभवतः अन्न आदि संग्रह हेतु काम में लिए जाते थे।
- इन मृदभाण्डों पर **काले एवं सफेद** वर्णकों से चित्रण भी किया जाता था, जिसमें आड़ी-तिरछी रेखाएँ, लूप, बिन्दुओं का समूह, वर्ग, वर्ग जालक, त्रिभुज, तरंगाकार रेखाएँ

- यहाँ से हमें **चाँदी के 2744 पंचमार्क सिक्के** मिले हैं ।

33. बयाना :

- यह भरतपुर में स्थित है ।
- इसका प्राचीन नाम श्रीपंथ है ।
- यहाँ से गुप्तकालीन सिक्के एवं नील की खेती के साक्ष्य मिले हैं ।

क्र.स.	संस्कृति काल	स्थल
1.	पुरा पाषाण काल	डीडवाना एवं जायल (नागौर), भानगढ़ (अलवर), विराटनगर (जयपुर), दर (भरतपुर), **इन्द्रगढ़ (कोटा)**
2.	मध्य पाषाण काल	**बागौर (भीलवाड़ा)**, विराटनगर (जयपुर), तिलवाड़ा (बाड़मेर)
3.	नव पाषाण काल	आहड़ (उदयपुर), कालीबंगा (हनुमानगढ़), **गिलूण्ड** (राजसमंद), झर (जयपुर)
4.	ताम्र पाषाण काल	बागौर (भीलवाड़ा), तिलवाड़ा (बाड़मेर), **बालाथल (उदयपुर)**
5.	ताम्रयुगीन	**गणेश्वर (सीकर)**, साबणियां, पूंगल (बीकानेर), बूढ़ापुष्कर (अजमेर), **बेणेश्वर (डूंगरपुर)**, नन्दलालपुरा, किराड़ोत, चीथबाड़ी (जयपुर), कुराड़ा (परबतसर), पलाना (जालौर), मलाह (भरतपुर), कोलमाहौली (सवाईमाधोपुर)
6.	लौह युगीन	**नोह (भरतपुर), सुनारी (झुंझुनू)**, विराटनगर, जोधपुरा, सांभर (जयपुर), रैंढ़, नगर, नैणवा, भीनमाल (जालौर), नगरी (चित्तौड़गढ़), चक-84, तरखानवाला (गंगानगर), ईसवाल (उदयपुर)

सारांश

- बागौर – भीलवाड़ा
- कालीबंगा – हनुमानगढ़
- खोजकर्ता - अमलानंद घोस
- आहड़ – (उदयपुर)- अक्षयकीर्ति व्यास
- बैराठ – (जयपुर)- दयाराम साहनी 1936-37 में
- गणेश्वर (सीकर)- रत्नचंद्र अग्रवाल द्वारा उत्खनन , ताम्रयुगीन सभ्यता
- गिलुण्ड (राजसमंद)- बी .बी .लाल
- रंगहमल (हनुमानगढ़) – डॉ. ह्नारिड द्वारा उत्खनन
- ओझियाना (भीलवाड़ा)- B.R. मीणा द्वारा उत्खनन
- नगरी (चितौड़) – डॉ. डी . आर . भण्डारकर
- सुनारी (झुंझनु)- लोहा गलाने की प्राचीन भट्टिया
- जोधपुर (जयपुर)- R. C. अग्रवाल द्वारा उत्खनन
- तिलवाड़ा (बाड़मेर)- V.N. मिश्र
- रैंढ (Tonk)- दयाराम साहनी
- नगर (Tonk) – कृष्ण देव
- भिनमाल (जालौर)- रतनचंद्र अग्रवाल
- नोह (भरतपुर)- रतनचंद्र अग्रवाल

लेखक	ग्रंथ
करणीदान	सूरज प्रकाश
दोलतविजय	खुमानरासो
पद्मनाभ	**कान्हड़दे प्रबंध**
जगजीवन भट्ट	अजितोदय
ए हिस्ट्री ऑफ राजस्थान	रीमा हूजा
पृथ्वीराज विजय	जयानक
वंशभास्कर	सूर्यमल मिश्रण

अभ्यास प्रश्न

1. "ए सर्वे वर्क ऑफ एनशिएन्ट साइट्स अलोंग दी लोस्ट सरस्वती रिवर" किसका कार्य था?

   (a) एम. आर. मुग़ल (b) ओरैल स्टैन
   (c) हरमन गोइट्ज (d) वी. एन. मिश्रा
   उत्तर :- b

2. प्राचीन सरस्वती नदी के किनारे बसी राजस्थान की सबसे प्राचीन सभ्यता कौनसी है?

   (a) कालीबंगा (b) आहड़
   (c) गिलूण्ड (d) गणेश्वर
   उत्तर :- a

3. निम्नांकित में से किस इतिहासवेत्ता ने कालीबंगा को सिंधु घाटी साम्राज्य की तृतीय राजधानी कहा है?

   (a) जी. एच. ओझा (b) श्यामल दास

(c) दशरथ शर्मा (d) दयाराम साहनी
उत्तर :- c

4. राजस्थान की किस सभ्यता को ताम्रयुगीन सभ्यता की जननी कहते हैं?

(a) नागौर (b) गिलूण्ड
(c) आहड़ (d) गणेश्वर

उत्तर :- d

5. प्राचीन भारत के टाटानगर के नाम से विख्यात सभ्यता है?

(a) तिलवाड़ा (b) नलियासर
(c) जोधपुरा (d) रैढ़
उत्तर :- d

6. मालव सिक्के व आहत मुद्राएँ किस सभ्यता के अवशेष हैं?
(a) जोधपुरा (b) रैढ़
(c) नगर (मालव नगर) (d) नलियासर
उत्तर :- c

7. कान्तली नदी के किनारे स्थित गणेश्वर की सभ्यता का उत्खनन किसके नेतृत्व में हुआ?
(a) आर.सी. अग्रवाल व एच.एम. साँकलिया
(b) आर.सी. अग्रवाल व अमलानंद घोष
(c) आर.सी. अग्रवाल व विजयकुमार
(d) आर.सी. अग्रवाल व अक्षय कीर्ति व्यास
उत्तर :- B

8. इनमें से कौनसा स्थल लौहयुगीन सभ्यता से सम्बन्धित नहीं है?
(a) डेरा (b) जोधपुरा
(c) विराटनगर (d) आहड़

उत्तर :- D

9. निम्न में से कौन कालीबंगा सभ्यता से सम्बन्धित नहीं है-
(a) अमलानंद घोष (b) बी.बी. लाल

(c) बी.के. थापर (d) आर.सी. अग्रवाल

उत्तर :- D

10. एक घर में एक साथ छः चूल्हे किस पुरातात्विक स्थल में प्राप्त हुए हैं?
(a) कालीबंगा (b) आहड़
(c) गिलूण्ड (d) बागोर
उत्तर :- b

अध्याय – 3
ऐतिहासिक राजस्थान

- **महत्वपूर्ण ऐतिहासिक केंद्र**
  अल्बर्ट हॉल म्यूजियम
  जयपुर के रामनिवास बाग में स्थित।

  निर्माण:-
  इसकी नींव महाराजा रामसिंह के शासनकाल में सन् **1876 में प्रिंस अल्बर्ट** ने रखी और उन्हीं के नाम पर इस संग्रहालय का नाम अल्बर्ट म्यूजियम रखा गया।
  शुरुआत :- 1876 ई. में प्रिन्स एल्बर्ट द्वारा।
  लागत: 4 लाख रुपये।
  डिजाइनकर्ता :- सर सैम्यूल स्विंटन जैकब
- भारतीय एवं फारसी (मुग़ल) शैली में निर्मित।
- राजस्थान का **प्रथम एवं सबसे बड़ा संग्रहालय**।
- इस संग्रहालय को सन् 1887 में सर एडवर्ड बेडफोर्ड द्वारा विधिवत उद्घाटन कर जनता के लिए खोल दिया गया।
- इस संग्रहालय में मिस्र की प्राचीन कालीन ममी रखी हुई है। यह ममी जयपुर में पैनोपोलिस (मिस्र) से लाई गई थी। यह ममी '**तूतू नामक**' महिला की ममी है, जो खेम नामक देव के उपासक पुरोहितों के परिवार की सदस्य थी।
- इस संग्रहालय में ईरान के शाह द्वारा मिर्जा राजा जयसिंह को भेंट किया गया दुनिया का **अप्रतिम बहुमूल्य गलीचा** रखा हुआ है।
- अल्बर्ट हॉल देश की एकमात्र ऐसी ईमारत है जिसमें कई देशों की स्थापत्य शैली देखने को मिलती है।
- इस संग्रहालय में सन् 1506 से 1922 तक के जयपुर के राजाओं के चित्र एवं राज्य चिह्न रखे हुए हैं। इस संग्रहालय में कई पुराने चित्र, दरियां, हाथीदाँत, कीमती पत्थर, धातु मूर्तियाँ एवं रंग-बिरंगी वस्तुएँ भी रखी हुई हैं।
- वर्ष 2018 में राजस्थान के मुख्यमंत्री एवं उपमुख्यमंत्री का **शपथ समारोह अल्बर्ट हॉल** में आयोजित किया गया।

राजस्थान पुरातत्व एवं संग्रहालय विभाग
- **वर्ष 1950** में जयपुर में स्थापित।
- यह विभाग प्रदेश में बिखरी हुई पुरा सम्पदा, सांस्कृतिक धरोहर की खोज, सर्वेक्षण तथा प्रचार-प्रसार का कार्य करता है।
- इस विभाग द्वारा राजस्थान में 320 से ज्यादा स्मारक एवं पुरास्थल संरक्षित घोषित किए जा चुके हैं।
- यह विभाग द रिसर्चर' नामक पत्रिका का प्रकाशन भी करता है।

अरबी फारसी शोध संस्थान
- सन् 1978 में टोंक में स्थापित।

INFUSION NOTES WHEN ONLY THE BEST WILL DO

संस्कृत भाषा एवं नागरी लिपि में पांच शिलाओं पर उत्कीर्ण है। । इसमें भौगोलिक स्थिति का, जनजीवन का, एकलिंग मंदिर का वर्णन, चित्तौड़ का वर्णन- (चित्रांग ताल, दुर्ग, वैष्णव तीर्थ के रूप में) किया गया है।

- इसमें मुख्यत: कुम्भा के विजयों का विस्तार से वर्णन मिलता है।
- इसका रचयिता कान्हा व्यास है। जबकि डॉ. गौरीशंकर हीराचन्द ओझा के अनुसार इसका रचयिता महेश भट्ट है।

जगन्नाथराय प्रशस्ति (1652) :-

- यह जगदीश मंदिर, उदयपुर में उत्कीर्ण है।
- इसमें बापा से साँगा तक की उपलब्धियों का वर्णन है।
- यह मंदिर जगतसिंह प्रथम द्वारा बनाया गया।
- यह पंचायतन शैली का लेख है। जिसे अर्जुन की निगरानी में तथा सूत्राकार भाणा व उसके पुत्रा मुकुन्द की अध्यक्षता में बनवाया गया।

राजप्रशस्ति (1676) :-

- यह प्रशस्ति राजसंमद झील के तट पर नौ चौकी स्थान के ताकों में 25 काली पाषाण शिलाओं पर पद्य संस्कृत भाषा में उत्कीर्ण है, यह विश्व की सबसे बड़ी प्रशस्ति अभलेख है।
- इसका रचयिता तैलंग ब्राह्मण रणछोड़ भट्ट था।
- मेवाड़ के शासकों की उपलब्धियों का वर्णन मिलता है।
- यह प्रशस्ति जगतसिंह प्रथम तथा राजसिंह के काल की उपलब्धियां जानने के लिए महत्वपूर्ण स्त्रोत है, यह विश्व की सबसे बड़ी पाषाण उत्कीर्ण प्रशस्ति है।

चौहान वंश का इतिहास

अजमेर के चौहान

वासुदेव चौहान (वासुदेव प्रथम)

शाकभरी का प्राचीन नाम सपादलक्ष था। सपादलक्ष का अर्थ सवा लाख गांवों का समूह। यहीं पर वासुदेव चौहान (वासुदेव प्रथम) ने चौहान वंश की नींव डाली। इसलिए इन्हें चौहानों का आदि पुरुष भी कहते हैं। वासुदेव प्रथम शाकम्भरी/सांभर को अपनी राजधानी बनाया। सांभर झील का निर्माण भी इसी शासक ने करवाया।

पृथ्वीराज प्रथम

चौहान वंश का प्रथम स्वतंत्र शासक पृथ्वीराज प्रथम था। पृथ्वीराज प्रथम ने गुजरात के भडौच पर अधिकार कर वहां आशापूर्णा देवी के मंदिर का निर्माण करवाया।

अजयराज प्रथम

पृथ्वीराज के बाद अजयराज शासक बना। **अजयराज ने 1113 ई. में पहाडियों के मध्य अजमेरु (अजमेर) नगर की स्थापना की** और इसे नई राजधानी बनाया। अजयराज ने पहाडियों के मध्य अजमेर के दुर्ग का निर्माण करवाया। मेवाड़ के पृथ्वीराज सिसोदिया ने 15 वीं सदी में इसका नाम तारागढ़ दुर्ग कर दिया। इस दुर्ग को पूर्व का जिब्राल्टर कहा जाता है।

अर्णोराज (1133-1155 ई.)

अर्णोराज अजयराज का पुत्र था। अर्णोराज का शासनकाल 1133 -1155 ई. तक रहा।

1. **अर्णोराज ने 1137 ई. में आनासागर झील का निर्माण करवाया।**
2. **आर्णोराज ने पुष्कर में वराह मंदिर का निर्माण अर्णोराज ने करवाया।**
3. अर्णोराज को गुजरात के चालुक्य शासक कुमारपाल ने आबू के निकट युद्ध में पराजित किया था
4. अर्णोराज के पुत्र जगदेव ने अर्णोराज की हत्या कर दी इसलिए जगदेव को चौहानों में पितृहन्ता कहा जाता है।

विग्रहराज चतुर्थ (बीसलदेव) (1153-1164 ई.)

1. बीसलदेव का कार्यकाल चौहान वंश का स्वर्णकाल कहा जाता है।
2. **बीसलदेव को कविबांधव भी कहा जाता है।**
3. बीसलदेव ने हरिकेलि (नाटक) की रचना की। जिसमें शिव-पार्वती व कुमार कार्तिकेय का वर्णन है।
4. बीसलदेव दरबारी कवि **नरपति नाल्ह ने बीसलदेव रासो ग्रन्थ की रचना की।**
5. बीसलदेव कवि **सोमदेव ने ललित विग्रहराज की रचना की।**
6. विग्रहराज चतुर्थ ने बीसलसागर तालाब (वर्तमान बीसलपुर बाँध के स्थान पर) का निर्माण करवाया था।
7. 1153 से 1156 ई. के मध्य विग्रहराज (बीसलदेव) ने अजमेर में एक संस्कृत विद्यालय का निर्माण करवाया जिसे **1200 ई. में कुतुबुद्दीन ऐबक ने संस्कृत विद्यालय को तुडवाकर अढ़ाई दिन का झोपडाऽ बनवाया।**
8. विग्रहराज के बारे में किल होर्न ने लिखा है कि **"वह उन हिन्दू शासको में से एक था जो कालीदास व भवभूति से होड़ कर सकता था"।**

पृथ्वीराज तृतीय (पृथ्वीराज चौहान)

1177 ई. में पृथ्वीराज चौहान ने 11 वर्ष की अवस्था में राज गद्दी संभाली। उनके पिता का नाम सोमेश्वर तथा माता का नाम कर्पूरी देवी था।

रायपिथौरा – पृथ्वी राज तृतीय चौहान को यह उपाधि प्रदान की गई है।

- पृथ्वीराज चौहान तृतीय का **पुत्र गोविंदराज चौहान** था।
- पृथ्वीराज चौहान तृतीय का **प्रधानमंत्री - कैमास (कदंबदास)**
- **पृथ्वीराज चौहान तृतीय की उपाधियाँ** - राय पिथौरा, दल पंगुल (विश्व विजेता) आदि।
- **पृथ्वीराज चौहान तृतीय के दरबारी कवि** - चंदरबरदाई, वागीश्वर, विद्यापति गौड़, जयानक, जनार्दन, आशाधर आदि।
- पृथ्वीराज चौहान तृतीय अजमेर के चौहान वंश का अंतिम प्रतापी शासक था, जिसने दिल्ली और अजमेर राजधानीयों से शासन किया।
- पृथ्वीराज चौहान तृतीय मात्र 11 वर्ष की अल्पायु में शासक बने थे, इसलिए शासन की बागडोर इसकी माँ कर्पूरी देवी ने संभाली।
- पृथ्वीराज चौहान तृतीय ने भंडानक जाति एवं नागार्जुन के विद्रोह का दमन किया था।
- **महोबा/तुमुल का युद्ध** - पृथ्वीराज चौहान तृतीय ने अपनी दिग्विजय की नीति के तहत 1182 ई० में **'महोबा के युद्ध/तुमुल का युद्ध'** (उत्तर प्रदेश) में परमर्दी देव चन्देल (परमर्दी देव के सेनापति आल्हा व उदल) को पराजित किया।
- पृथ्वीराज चौहान तृतीय कन्नौज के राजा जयचंद गहड़वाल को हराकर उसकी पुत्री संयोगिता को स्वयंवर से उठाकर ले गया, जिससे पृथ्वीराज चौहान तृतीय एवं जयचंद गहड़वाल के बीच दुश्मनी बढ़ गयी। इसी वजह से तराइन के युद्ध में जयचंद गहड़वाल ने पृथ्वीराज चौहान तृतीय की बजाय मोहम्मद गौरी की सहायता की थी।

तराइन का प्रथम युद्ध (1191 ई.)

तराइन का प्रथम युद्ध 1191 ई० में पृथ्वीराज चौहान तृतीय व मोहम्मद गौरी के मध्य तराइन के मैदान करनाल (हरियाणा) में हुआ। इस युद्ध में पृथ्वीराज चौहान तृतीय की सेना की ओर से गोविंदराज तोमर ने तीर चलाया जिससे मोहम्मद गौरी घायल होकर वापस गजनी चला गया। इस प्रकार पृथ्वीराज चौहान तृतीय विजय हुई।

तराइन का द्वितीय युद्ध (1192 ई.)

तराइन का द्वितीय युद्ध भी पृथ्वीराज चौहान तथा मौहम्मद गौरी बीच लड़ा गया। इसमें मौहम्मद गौरी की विजय हुई। इस युद्ध में पृथ्वीराज चौहान के स्वसुर जयचंद ने मौहम्मद गौरी का साथ दिया, क्योंकि पृथ्वीराज चौहान ने जयचंद की पुत्री संयोगिता का हरण कर उससे विवाह किया था।

1. पृथ्वीराज चौहान के मित्र एवं दरबारी कवि **चंद्रबरदाई ने पृथ्वीराज रासो नामक ग्रन्थ। लिखा**
2. **जयानक ने पृथ्वीराज विजय नामक ग्रन्थ लिखा।**
3. सूफी संत **ख्वाजा मोइनुद्दीन चिश्ती पृथ्वी राज चौहान के समय अजमेर आये।**
4. पृथ्वीराज चौहान तृतीय के घोड़े का नाम नाट्यरंभा था

- **रणथम्भौर के चौहान**

रणथम्भौर और दिल्ली सल्तनत

- हम्मीर चौहान (1282-1301 ई.) अपने पिता जैत्रसिंह का तीसरा पुत्र था। सभी पुत्रों में योग्य होने के कारण उसका राज्यारोहण उत्सव जैत्रसिंह ने अपने जीवनकाल में ही 1282 ई. में सम्पन्न करवा दिया था।
- वह रणथम्भौर के चौहान शासकों में अंतिम परंतु सर्वाधिक महत्त्वपूर्ण शासक था और उसके शासनकाल की जानकारी अनेकानेक ऐतिहासिक साधनों से प्राप्त होती है। मुस्लिम इतिहासकारों, अमीर खुसरो तथा जियाउद्दीन बरनी की रचनाओं के अलावा न्यायचंद्र सूरी के हम्मीर महाकाव्य, चंद्रशेखर के सुर्जन चरित्र और बाद में लिखे गये हिन्दी ग्रन्थों - जोधराजकृत हम्मीर रासो तथा चंद्रशेखर के हम्मीर हठ में हमें हम्मीर की शूरवीरता तथा विजयों का विस्तृत विवरण मिलता है।
- दिग्विजय के बाद हम्मीर ने कोटि यज्ञों का आयोजन किया जिससे उसकी प्रतिष्ठा में वृद्धि हुई।
- मेवाड़ के शासक समरसिंह को पराजित कर हम्मीर ने अपनी धाक सम्पूर्ण राजस्थान में जमा दी।

हम्मीर और जलालुद्दीन खिलजी-

- हम्मीर को अपनी शक्ति बढ़ाने का मौका इसलिए मिल गया कि इस दौरान दिल्ली में कमजोर सुल्तानों के कारण अव्यवस्था का दौर चल रहा था।
- 1290 ई. में दिल्ली का सुल्तान बनने के बाद जलालुद्दीन खिलजी ने हम्मीर की बढ़ती हुई शक्ति को समाप्त करने का निर्णय लिया। सुल्तान ने झाँई पर अधिकार कर रणथम्भौर को घेर लिया किन्तु सभी प्रयत्नों की असफलता के बाद शाही सेना को दिल्ली लौट जाना पड़ा।
- सुल्तान ने 1292 ई. में एक बार फिर रणथम्भौर विजय का प्रयास किया। हम्मीर के सफल प्रतिरोध के कारण इस बार भी उसे निराशा ही हाथ लगी।
- जलालुद्दीन ने यह कहते हुए दुर्ग का घेरा हटा लिया कि "मैं ऐसे सैंकड़ों किलों को भी मुसलमान के एक बाल के बराबर महत्त्व नहीं देता।"
- जलालुद्दीन फिरोज खिलजी के इन अभियानों का आँखों देखा वर्णन **अमीर खुसरो ने 'मिफ्ता-उल-फुतूह'** नामक ग्रंथ में किया है।

हम्मीर और अलाउद्दीन खिलजी –

- 1296 ई. में अलाउद्दीन खिलजी अपने चाचा जलालुद्दीन खिलजी की हत्या कर दिल्ली का सुल्तान बन गया।

अलाउद्दीन खिलजी ने रणथम्भौर पर आक्रमण करने प्रारम्भ कर दिये जिनके निम्नलिखित कारण थे –

1. रणथम्भौर सामरिक दृष्टि से बहुत महत्त्वपूर्ण था। अलाउद्दीन खिलजी इस अभेद दुर्ग पर अधिकार कर राजपूत नरेशों पर अपनी धाक जमाना चाहता था।
2. रणथम्भौर दिल्ली के काफी निकट था। इस कारण यहाँ के चौहानों की बढ़ती हुई शक्ति को अलाउद्दीन खिलजी किसी भी स्थिति में सहन नहीं कर सकता था।
3. अलाउद्दीन खिलजी से पहले उसके चाचा जलालुद्दीन खिलजी ने इस दुर्ग पर अधिकार करने के लिए दो बार प्रयास किए थे किन्तु वह असफल रहा। अलाउद्दीन खिलजी अपने चाचा की पराजय का बदला लेना चाहता था।
4. अलाउद्दीन खिलजी एक महत्त्वाकांक्षी और साम्राज्यवादी शासक था। रणथम्भौर पर आक्रमण इसी नीति का परिणाम था।

हम्मीर द्वारा अलाउद्दीन खिलजी के विद्रोहियों को शरण देना –

- नयनचन्द्र सूरी की रचना 'हम्मीर महाकाव्य' के अनुसार रणथम्भौर पर आक्रमण का कारण यहाँ के शासक हम्मीर द्वारा अलाउद्दीन खिलजी के विद्रोही सेनापति मीर मुहम्मद शाह को शरण देना था।
- मुस्लिम इतिहासकार इसामी ने भी अपने विवरण में इसी कारण की पुष्टि की है। उन्होंने लिखा है कि 1299 ई. में अलाउद्दीन खिलजी ने अपने दो सेनापतियों उलूग खां व नूसरत खां को गुजरात पर आक्रमण करने के लिए भेजा था।
- गुजरात विजय के बाद जब यह सेना वापिस लौट रही थी तो जालौर के पास लूट के माल के बंटवारे के प्रश्न पर 'नव-मुसलमानों' (जलालुद्दीन फिरोज खिलजी के समय भारत में बस चुके वे मंगोल, जिन्होंने इस्लाम स्वीकार कर लिया था) ने विद्रोह कर दिया। यद्यपि विद्रोहियों का बर्बरता के साथ दमन कर दिया गया किन्तु उनमें से मुहम्मदशाह व उसका भाई कैहब्रु भाग कर रणथम्भौर के शासक हम्मीर के पास पहुँचने में सफल हो गया।
- हम्मीर ने न केवल उन्हें शरण दी अपितु मुहम्मदशाह को 'जगाना' की जागीर भी दी। चन्द्रशेखर की रचना 'हम्मीर हठ' के अनुसार अलाउद्दीन खिलजी की एक मराठा बेगम से मीर मुहम्मदशाह को प्रेम हो गया था और उन दोनों ने मिलकर अलाउद्दीन खिलजी को समाप्त करने का एक षड्यंत्र रचा।

<u>अलाउद्दीन का चितोड़ पर आक्रमण</u>

- अलाउद्दीन खिलजी की तरफ से इन विद्रोहियों को सौंप देने की माँग की गई। इस माँग को जब हम्मीर द्वारा ठुकरा दिया गया तो अलाउद्दीन खिलजी की सेना ने रणथम्भौर पर आक्रमण कर दिया।
- 1299 ई. के अंत में अलाउद्दीन खिलजी ने उलूग खां, अलप खां और नुसरत खां के नेतृत्व में एक सेना रणथम्भौर पर अधिकार करने के लिए भेजी। इस सेना ने 'रणथम्भौर की कुँजी' झाँई पर अधिकार कर लिया। इसामी के अनुसार विजय के बाद उलूग खां ने झाँई का नाम बदलकर 'नौ शहर' कर दिया।
- 'हम्मीर महाकाव्य' में लिखा है कि हम्मीर इस समय कोटियज्ञ समाप्त कर 'मुनिव्रत' में व्यस्त था। इस कारण स्वयं न जाकर अपने दो सेनापतियों – भीमसिंह व धर्मसिंह को सामना करने के लिए भेजा। इन दोनों सेनापतियों ने सेना को पीछे की तरफ खदेड़ दिया तथा उनसे लूट का माल छिन लिया।
- राजपूत सेना ने शत्रु सेना पर भयंकर हमला किया जिसमें अलाउद्दीन खिलजी की सेना को पराजय का सामना करना पड़ा। शाही सेना से लूटी गई सामग्री लेकर धर्मसिंह के नेतृत्व में सेना का एक दल तो रणथम्भौर लौट गया किन्तु भीमसिंह पीछे रह गया। इस अवसर का लाभ उठाकर बिखरी हुई शाही सेना ने अलपखां के नेतृत्व में उस पर हमला कर दिया। इस संघर्ष में भीमसिंह अपने सैंकड़ों सैनिकों सहित मारा गया। भीमसिंह की मृत्यु के लिए हम्मीर ने धर्मसिंह को उत्तरदायी मानते हुए उसे अंधा कर दिया और उसके स्थान पर भोजराज को नया मंत्री बनाया।
- झाँई विजय के बाद उलूग खां ने मेहलनसी नामक दूत के साथ हम्मीर के पास अलाउद्दीन खिलजी का संदेश पुनः भिजवाया। इस संदेश में दोनों विद्रोहियों – मुहम्मदशाह व उसके भाई कैहब्रु को सौंपने के साथ हम्मीर की बेटी देवलदी का विवाह सुल्तान के साथ करने की माँग की गई थी। यद्यपि देवलदी ने राज्य की रक्षा के लिए इस प्रस्ताव को स्वीकार कर लेने की सुझाव दिया किन्तु हम्मीर ने संघर्ष का रास्ता चुना।
- उलूग खां ने रणथम्भौर दुर्ग पर घेरा डालकर उसके चारों तरफ पाशिब व गरगच बनवाये और मगरबों द्वारा दुर्ग रक्षकों पर पत्थरों की बौछार की। दुर्ग में भी भैरव यंत्र, ठिकुलिया व मर्कटी यंत्र नामक पत्थर बरसाने वाले यंत्र लगे थे जिनके द्वारा फैंका गया एक पत्थर संयोग से नुसरत खां को लगा। **नुसरतखां** इसमें घायल हुआ और कुछ दिनों बाद उसकी मृत्यु हो गई।
- हम्मीर ने इस स्थिति का फायदा उठाने के लिए दुर्ग से बाहर निकलकर शाही सेना पर आक्रमण कर दिया। इस

अध्याय – 8

राजस्थान में किसान एवं जनजाति आंदोलन

राजस्थान में आजादी से पूर्व कई किसान एवं आदिवासी आंदोलन हुए जो उन पर किये जा रहे अत्याचारों के विरोध में हुए । राजस्थान में कई रियासतें किसानों से मनमाना कर "लाग" वसूलती थी । इनके विरोध में समय-समय पर किसान नेताओं ने राजस्थान में किसान आंदोलन किये । इसी तरह आदिवासियों के ऊपर हुए अत्याचारों के विरोध में भी कई आंदोलन हुए जिनका नेतृत्व आदिवासी नेताओं ने किया जो राजस्थान में आदिवासी आंदोलन या किसान आंदोलन के रूप में जाने गए ।

बिजौलिया किसान आंदोलन

बिजौलिया किसान आंदोलन राजस्थान से शुरू होकर पुरे देश में फैलने वाला एक संगठित किसान आंदोलन था । बिजौलिया किसान आंदोलन इतिहास का सबसे लम्बा चलने वाला अहिंसक किसान आंदोलन था, जोकि करीब 44 साल तक चला ।

बिजौलिया किसान आंदोलन (1897-1941 44 वर्षों तक) –

जिला भीलवाड़ा
बिजौलिया का प्राचीन नाम विजयावल्ली था ।
संस्थापक अशोक परमार
बिजौलिया, मेवाड़ रियासत का ठिकाना था।
कारण

1. लगान की दरें अधिक थीं ।
2. लाग-बाग कई तरह के थे।
3. बेगार प्रथा का प्रचलन था।

बिजौलिया किसानों से 84 प्रकार का लाग-बाग (टेक्स) वसुल किया जा जाता था।
बिजौलिया के किसान लोगों में धाकड़ जाति के लोग अधिक थे।
बिजौलिया किसान आंदोलन तीन चरणों में पुरा हुआ था।

1. 1897 से 1916 नेतृत्व - साधु सीताराम दास
2. 1916 से 1923 नेतृत्व - विजयसिंह पथिक
3. 1923 से 1941 नेतृत्व – माणिक्य लाल वर्मा, हरिभाऊ उपाधाय जमनालाल बजाज, रामनारायण चौधरी

प्रथम चरण (1897 से 1916 तक) से

- 1897 में बिजौलिया के किसान गंगाराम धाकड़ के मृत्युभोज के अवसर पर गिरधारीपूरा गांव से एकत्रित होते और ठिकानेदार की शिकायत मेवाड़ के महाराणा से करने का निश्चिय करते हैं। और नानजी पटेल व ठाकरी पटेल को उदयपुर भेजा जाता है जहां मेवाड़ के महाराणा फतेहसिंह ने कोई भी कार्यवाही नहीं की। इस समय बिजौलिया के ठिकानेदार रावकृष्ण सिंह ने 1903 में किसानों पर चंवरी कर लगाया।
- चंवरी कर एक विवाह कर था, इसकी दर 5 रुपये थी। 1906 में कृष्णसिंह मर गया और नये ठिकानेदार राव पृथ्वीसिंह बने जिन्होंने तलवार बंधाई कर (उत्तराधिकारी शुल्क किसानों पर लागु कर दिया)।
- 1915 में पृथ्वी सिंह ने साधु सीताराम दास व इसके सहयोगी फतहकरण चारण व ब्रह्मदेव को बिजौलिया से निष्कासित कर दिया।

द्वितीय चरण (1916 से 1923 तक)

- 1917 में विजयसिंह पथिक ने ऊपरमाल पंचबोर्ड (ऊपरमाल पंचायत) का गठन मन्ना पटेल की अध्यक्षता में किया । बिजौलिया किसान आंदोलन को लोकप्रिय व प्रचलित करने वाले समाचार पत्र प्रताप 2. ऊपरमाल डंका थे ।
- 1919 में बिन्दुलाल भट्टाचार्य आयोग को बिजौलिया किसान आंदोलन की जांच के लिए भेजा जाता है। इस आयोग ने लगान की दरें कम करने तथा लाग-बागों को हटाने की सिफारिश की किन्तु मेवाड़ के महाराणा ने इसकी कोई भी सिफारिश स्वीकार नहीं की।
- 1922 में राजपुताना का ए.जी.जी. रॉबर्ट हॉलेण्ड बिजौलिया आते हैं और किसानों और ठिकानेदार के मध्य समझौता करवाते हैं यह समझौता स्थाई सिद्ध नहीं हुआ।
- 1923 में विजय सिंह पथिक को गिरफ्तार कर लिया जाता है और 6 वर्ष की सजा सुना दी जाती है।

तृतीय चरण (1923 से 1941)

- 1941 में मेवाड़ के प्रधानमंत्री सर टी. विजयराघवाचार्य थे इन्होंने अपने राजस्व मंत्री डॉ. मोहन सिंह मेहता को बिजौलिया भेजा इसने ठिकानेदार व किसानों के मध्य समझौता किया लगान की दरें कम कर दी अनेक लाग-बाग हटा दिये और बेगार प्रथा को समाप्त कर दिया ।
- यह किसान आंदोलन सफलता पूर्वक समाप्त होता है ।
- इस किसान आंदोलन में दो महिलाओं रानी भीलनी व उदी मालन ने भाग लिया था ।
- किसान आंदोलन के समय माणिक्यलाल वर्मा ने पंछीड़ा गीत लिखा था ।

बेंगू (चित्तौड़गढ़) किसान आंदोलन

- बेंगू (चित्तौड़गढ़) मेवाड़ राज्य का ठिकाना था।
- बेंगू के किसानों ने अपने यहाँ लाग-बाग, बेगार और ऊँचे लगान के विरुद्ध 1921 ई. में मेनाल (भीलवाड़ा) नामक स्थान पर आंदोलन शुरू किया।
- इसका नेतृत्व रामनारायण चौधरी ने किया।
- 1922 में मंडावरी में किसान आंदोलन को गोलियों की बौछार से तितर-बितर किया गया। यहाँ सिपाहियों की गोलियों का शिकार खुद एक सिपाही फेज खाँ हुआ।

- किसानों के विरोध के आगे ठाकुर अनूप सिंह को झुकना पड़ा और राजस्थान सेवा संघ और अनूप सिंह के बीच समझौता हो गया।
- मेवाड़ सरकार ने इस समझौते को बोल्शेविक संधि कहकर अनूपसिंह को उदयपुर में नजरबंद कर दिया।
- 13 जुलाई, 1923 को गोविन्दपुरा में किसान सम्मेलन पर सरकार ने गोलियां चलवायी जिसमें रूपाजी व कृपाजी नामक किसान मारे गये।
- बेंगू में किसानों की शिकायतों की जाँच हेतु सरकार ने बंदोबस्त आयुक्त श्री ट्रेन्च की अध्यक्षता में आयोग का गठन किया।
- सेटलमेन्ट कमिश्नर टेन्च की दमनकारी कार्यवाही से विजयसिंह पथिक पकड़े गये तथा उन्हें 3.5 वर्ष कठोर कारावास की सजा भुगतनी पड़ी।

प्रश्न- कथन

(A): ब्रिटिश दबाव के कारण मेवाड़ प्रशासन ने बिजोलिया आंदोलन से 1922 में समझौता किया।

(R): बिजोलिया जागीरदार ने 1922 के समझौते की भावना को मानने से इन्कार कर दिया।

इन दोनों वक्तव्यों का सावधानीपूर्वक परीक्षण कीजिये तथा निम्नांकित कूटों का प्रयोग कर सही उत्तर का चयन कीजिये : (RAS Pre- 26.10.2013)

कूट :

(1) A और R दोनों सही हैं तथा R, A की सही व्याख्या है।

(2) A और R दोनों सही हैं तथा R,A की सही व्याख्या नहीं है।

(3) A सत्य है, परन्तु R असत्य है।

(4) A असत्य है, परन्तु R सत्य है।

Ans. 2

बूँदी का किसान आंदोलन

राजस्थान में भूमि बंदोबस्त व्यवस्था के बावजूद भी गावों में धीरे-धीरे महाजनों का वर्चस्व बढ़ने लगा । 'साद' प्रथा के अंतर्गत प्रत्येक क्षेत्र में महाजन से लगान की अदायगी का आश्वासन लिया जाने लगा । इस व्यवस्था से किसान अधिकाधिक रूप से महाजनों पर आश्रित होने लगे तथा उनके चंगुल में फंसने लगे। 19 वीं सदी के अंत में व 20 वीं सदी के शुरू में जागीरदारों द्वारा किसानों पर नए-नए कर लगाये जाने लगे और उनसे बड़ी धनराशि एकत्रित की जाने लगी। जागीरदारी व्यवस्था शोषणात्मक हो गई। किसानों से अनेक करों के अतिरिक्त विभिन्न प्रकार के लाग-बाग लेने की प्रथा भी प्रारंभ हो गई। ये लागें दो प्रकार की थी।

1. स्थाई लाग

2. अस्थाई लाग (इन्हें कभी-कभी लिया जाता था।)

इस कारण से जागीर क्षेत्र में किसानों की स्थिति अत्यंत दयनीय हो गई जिसके कारण किसानों में रोष उत्पन्न हुआ तथा वे आंदोलन करने को उतारू हो गए।

- बिजौलिया, बेंगू और अन्य क्षेत्र के किसानों के समान ही बूँदी राज्य के किसानों को भी अनेक प्रकार की लागतों (लगभग 25%), बेगार एवं ऊँची दरों पर लगान की रकम देनी पड़ रही थी।
- बूँदी राज्य में वसूले जा रहे कई करों के अलावा 1 रुपये पर 1 आने की दर से स्थाई रूप से युद्धकोष के लिए धनराशि ली जाने लगी। किसानों के लिए यह अतिरिक्त भार असहनीय था । किसान राजकीय अत्याचारों से परेशान होने लगे।
- मेवाड़ राज्य के बिजौलिया में किसान आंदोलन की कहानियां पूरे राजस्थान में व्याप्त हुई । अप्रैल 1922 में बिजौलिया की सीमा से जुड़े बूँदी राज्य के 'बराड़' क्षेत्र के पीड़ित किसानों ने आंदोलन प्रारम्भ कर दिया। इसीलिए इस आंदोलन को बरड़ किसान आंदोलन भी कहते हैं । किसानों को राजस्थान सेवा संघ का मार्गदर्शन प्राप्त था।
- किसानों ने राज्य की सरकार को अनियमित लाग, बेगार व भेंट आदि देना बंद कर दिया। आंदोलन का नेतृत्व 'राजस्थान सेवा संघ' के कर्मठ कार्यकर्ता 'नयनू राम शर्मा कर रहे थे। इनके नेतृत्व में डाबी नामक स्थान पर किसानों का एक सम्मेलन बुलाया।
- राज्य की ओर से बातचीत द्वारा किसानों की समस्याओं एवं शिकायतों को दूर करने के लिए कई प्रयास हुए, किन्तु वे विफल हो गए। तब राज्य की सरकार ने दमनात्मक नीति अपनाना शुरू किया और निहत्थे किसानों पर निर्ममतापूर्वक लाठियां व गोलियां बरसाई गई ।
- सत्याग्रह करने वाली स्त्रियों पर घुड़सवारों द्वारा घोड़े दौड़ाकर एवं भाले चलाकर अमानवीय अत्याचार किया गया। पुलिस द्वारा किसानों पर की गई। गोलीबारी में झण्डा गीत गाते हुए 'नानकजी भील' शहीद हो गए ।
- आंदोलनकारियों के नेता नयनू राम शर्मा, नारायण लाल, भंवरलाल आदि एवं राजस्थान सेवा संघ के अनेक कार्यकर्ताओं को गिरफ्तार कर मुकदमे चलाए गए। नयनू राम शर्मा को राजद्रोह के अपराध में 4 वर्ष के कठोर कारावास की सजा दी ।
- यद्यपि यह आंदोलन असफल रहा किन्तु इस आंदोलन से यहाँ के किसानों को कुछ रियायतें अवश्य प्राप्त हुई और भ्रष्ट अधिकारियों को दण्डित किया गया तथा राज्य के प्रशासन में सुधारों का सूत्रपात हुआ।
- बूँदी का किसान आंदोलन राज्य प्रशासन के विरुद्ध था, जबकि मेवाड़ राज्य के बिजौलिया के आंदोलन में किसानों ने अधिकांशतः जागीर व्यवस्था का विरोध किया था । बूँदी के किसान आंदोलन की विशेषता यह थी कि इसमें बड़ी संख्या में महिलाओं ने महत्वपूर्ण भूमिका निभाई थी।

5. राजस्थान का एक लोकगीत जिसमें ....को विरहणियों का पक्षी कहा गया है
(a) पीपली
(b) लावणी
(c) पपैया
(d) कुरजां गीत **(d)**

6. निम्न में से कौनसी माण्ड गायिका बीकानेर से सम्बंधित नहीं हैं?
(a) गवरी देवी
(b) हाजन अल्लाह जिलाई बाई
(c) बन्नो बेगम
(d) इनमें से कोई नहीं **(c)**

7. ' म्हारी बरसाले री मूमल , हालेंनी ऐ आलीजे रे देख ' नामक लोकगीत किस क्षेत्र का है ?
(a) जोधपुर
(b) बीकानेर
(c) जैसलमेर
(d) सिरोही **(c)**

8. सूबटिया लोकगीत का सम्बन्ध किससे है?
(a) गरासिया स्त्री से
(b) सती स्त्री से
(c) वीरांगना स्त्री से
(d) भील स्त्री से **(d)**

9."लांगुरिया गीत" का सम्बन्ध है?
(a) शिला देवी
(b) करणी माता
(c) राणी सती
(d) कैलादेवी **(d)**

10. बारात को भोजन कराते समय गालियों के रूप में गाए जाने वाले गीत
(a) कुकडलू
(b) सीठणे
(c) घोड़ी
(d) तोरण **(b)**

• राजस्थान के प्रमुख नृत्य

➢ **शास्त्रीय नृत्य**
- राजस्थान का एकमात्र शास्त्रीय नृत्य ' कथक ' हैं ।
- कथक नृत्य के प्रवर्तक भानुजी को माना जाता है।
- जयपुर घराना कथक नृत्य का आदिम घराना है।
- वर्तमान में कथक नृत्य उत्तर भारत का शास्त्रीय नृत्य हैं कथक नृत्य के अन्तर्राष्ट्रीय ख्याति प्राप्त कलाकार बिरजू महाराज है।
- अन्य कलाकार प्रेरणा श्रीमाली , उदयशंकर ।

➢ **लोकनृत्य**
- लोकनृत्य वह कला है, जिसके द्वारा हाव-भाव, अंग संचालन, भाव भंगिमाओं के माध्यम से मनोदशा को व्यक्त करना एवं आनंद व उमंग से भरकर सामूहिक रूप से किए जाने वाले नृत्य ही लोकनृत्य कहलाते है।

➢ राज्य के प्रमुख लोकनृत्य को चार भागों में विभाजित किया गया है ।

1. **जनजातीयों के नृत्य**
2. **व्यवसायिक लोकनृत्य**
3. **जातीय नृत्य**
4. **क्षेत्रिय नृत्य**

❖ **राजस्थान के क्षेत्रीय लोकनृत्य**

➢ **घूमर**
- ' घूमर ' शब्द की उत्पत्ति ' घुम्म ' से हुई है , जिसका अर्थ होता है , ' लहंगे का घेर ' ।
- घूमर में महिलाएं घेरा बनाकर ' घूमर लोकगीत ' की धुन पर नाचती हैं ।
- घूमर के साथ आठ मात्रा के कहरवे की विशेष चाल होती हैं, जिसे सवाई कहते हैं ।
- घूमर नृत्य की उत्पति मध्य एशिया के भरंग नृत्य से मानी जाती हैं ।
- यह राजस्थान का राजकीय नृत्य है ।
- यह नृत्य मारवाड़ व मेवाड़ में राजघराने की महिलाओं द्वारा गणगौर पर किया जाता है ।
- राजस्थान की संस्कृति का पहचान चिह्न बन चुका ' घुमर ' नृत्य राजस्थान के ' लोकनृत्यों की आत्मा ' कहलाता है।
- इसे सिरमौर नृत्य व नृत्यों की आत्मा सामंतशाही नृत्य , रजवाड़ी नृत्य , महिलाओं का सर्वाधिक लोकप्रिय नृत्य कहते हैं ।
- यह गरबा नृत्य की तरह किया जाता है ।
- घूमर- साधारण स्त्रियों द्वारा किया जाता है।
- झूमरिया- यह बालिकाओं द्वारा किया जाता है।

INFUSION NOTES WHEN ONLY THE BEST WILL DO

- **झूमर नृत्य**
- हाड़ौती क्षेत्र में स्त्रियों द्वारा मांगलिक अवसरों एवं त्यौहारों पर किया जाने वाला गोलाकार नृत्य जो डाण्डियों की सहायता से किया जाता है।
- **घुमरा नृत्य**
- इसे भील जनजाति की महिला करती है।
- यह गरबा जैसा होता है।
- यह मांगलिक अवसर पर किया जाता है ।
- यह अर्द्ध वृताकार घेरे में महिलायें करती हैं ।
- इस नृत्य में 2 दल होते हैं जिसमें एक दल गाता है तथा दूसरा नाचता है।
- **घूमर-घूमरा नृत्य**
- घूमर - घूमरा नृत्य राजस्थान का एकमात्र शोक सूचक नृत्य है।
- जो केवल वागड़ क्षेत्र के कुछ ब्राह्मण समुदाय में किया जाता है ।
- **ढोल नृत्य**

- राजस्थान के जालौर क्षेत्र में शादी के अवसर पर पुरुषों के द्वारा सामूहिक नृत्य करते हुए विविध कलाबाजियाँ दिखाते हैं।
- इस नृत्य को प्रकाश में लाने का श्रेय जयनारायण व्यास को जाता है।
- यह नृत्य ढोली, सरगरा, माली, भील आदि जातियों द्वारा किया जाता है।
- इस नृत्य में कई ढोल एवं थालियाँ एक साथ बजाए जाते हैं।
- ढोलवादकों का मुखिया थाकना शैली' में ढोल बजाना प्रारम्भ करता है।
- **घुड़ला नृत्य**

- घुड़ला नृत्य विशेष रूप से जोधपुर जिले में किया जाता है।
- घुड़ला नृत्य युवतियों के द्वारा किया जाता है ।
- घुड़ला नृत्य में स्त्रियाँ सुंदर श्रृंगार करके गोलाकार पथ पर नृत्य करती है ।
- घुड़ला नृत्य करते समय महिलाओं के सिर पर छिद्रित मटके रखे होते है । जिनमें जलता हुआ दीपक रखा जाता है । इस मटके को ही घुड़ला कहते हैं ।
- शीतला अष्टमी (चैत्र कृष्णा -8) पर घुडले का त्यौहार मनाया जाता है ।
- घुड़ला नृत्य को सर्वप्रथम मारवाड़ में घुड़ले खाँ की बेटी गिंदोली ने गणगौर उत्सव के समय शुरू किया था ।
- यह नृत्य दिन में नहीं अपितु रात्रि में किया जाता है ।
- इसमें चाल मंद व मादक होती है व घुड़ले को नाजुकता से संभाला जाता है , जो दर्शनीय है ।
- **घुड़ला नृत्य से एक कथा जुड़ी हुई है-** एक बार मारवाड़ के पीपाड़ा नामक स्थान पर स्त्रियाँ तालाब पर गौरी पूजन कर रही थी तभी अजमेर का सूबेदार मल्लू खाँ 140 कन्याओं का हरण करके ले जाता है । जोधपुर नरेश सातल देव ने इनका पीछा किया । इनका भयंकर युद्ध हुआ , जिसमें मल्लू खाँ के सेनापति घुडले का सिर छिद्रित कर सातल देव द्वारा लाया गया तब से यह नृत्य किया जाता है ।
- **डांडिया नृत्य**

- यह मारवाड़ का प्रतिनिधि नृत्य है, जिसमें 10 – 15 पुरुष विभिन्न प्रकार की वेशभूषा में स्वांग भरकर गोले में डंडियों को आपस में टकराते हुए नृत्य करते हैं।
- यह मूलत : गुजरात का है।
- राजस्थान में यह मारवाड़ का प्रसिद्ध है।
- यह होली के बाद खेलते हैं।
- यह पुरुष प्रधान नृत्य है इसमें शहनाई व नगाड़ा मुख्य वाद्य होता है।
- इस नृत्य में बड़ली के भैरुजी का गुणगान किया जाता है।
- इस नृत्य में धमाल गीत गाये जाते हैं।

➢ ***झाँझी नृत्य***

- *झाँझी नृत्य मारवाड़ क्षेत्र में महिलाओं के द्वारा किया जाता है ।*
- *झाँझी नृत्य के अन्तर्गत छोटे मटकों मे छिद्र करके महिलाएं समूह में उनको धारण करके यह नृत्य करती है।*

➢ ***लुम्बर नृत्य***

- *यह नृत्य स्त्रियों द्वारा होली पर किया जाता है ।*
- *यह नृत्य जालौर का प्रसिद्ध है ।*
- *इस नृत्य में ढोल , चंग वाद्य यंत्र काम में लिये जाते हैं ।*

➢ ***गैर नृत्य***

- *यह मुख्यतः फाल्गुन मास में भील पुरुषों के द्वारा किया गोल घेरे की आकृति में होने के कारण इस नृत्य का नाम घेर पड़ा । जो आगे चलकर गैर कहलाया ।*
- *गैर नृत्य करने वाले नृत्यकार गैरिये कहलाते हैं ।*
- *मेवाड़ व बाड़मेर क्षेत्र में गैर नृत्य किया जाता है ।*
- *यह नृत्य होली के अवसर पर किया जाता है ।*
- *गैर नृत्य के प्रमुख वाद्य यन्त्र ढ़ोल - बाकिया - थाली है ।*
- *प्रत्युत्तर में गाये जाने वाले शृंगार रस एवं भक्ति रस के गीत फाग कहलाते है ।*
- *गैर नृत्य में प्रयुक्त होने वाली छड को खाडा कहा जाता है।*
- *मेवाड़ में लाल / केसरिया पगड़ी पहनी जाती है ।*
- *बाड़मेर में सफेद आंगी (लम्बा फ्राक) कमर पर चमड़े का पट्टा व तलवार आदि लेकर नृत्य किया जाता है ।*
- *गैर नृत्य की प्रमुख विशेषता विचित्र वेशभूषा का प्रदर्शन है।*
- *भीलवाड़ा का **घूमर गैर** अत्यन्त प्रसिद्ध है ।*
- *मेणार / मेनार गाँव (उदयपुर) के ऊकारेश्वर चौराहे पर चैत्र माह के कृष्ण पक्ष की द्वितीया / जमरा बीज को **तलवारों की गैर** खेली जाती है ।*
- *नाथद्वारा (राजसमंद) में शीतला सप्तमी (चैत्र कृष्ण सप्तमी) से एक माह तक गैर नृत्य का आयोजन होता है।*
- ***आंगी - बांगी गैर नृत्य** यह चैत्र शुक्ल तृतीया के दिन किया जाता है । यह गैर लाखेटा गाँव (बाड़मेर) की प्रसिद्ध है ।*

➢ ***बिंदोरी नृत्य***

- *राज्य के झालावाड़ क्षेत्र में होली या विवाह के अवसर पर गैर के समान किया जाने वाला लोकनृत्य।*
- *यह पुरुष प्रधान नृत्य हैं।*

➢ ***चंग नृत्य***

- *शेखावाटी क्षेत्र में होली के समय पुरुषों द्वारा किया जाने वाला सामूहिक लोकनृत्य, जिसमें प्रत्येक पुरुष चंग की थाप पर गाते हुए नाचते हैं।*
- *इस नृत्य में धमाल गीत गाये जाते हैं।*

➢ ***गींदड़***

- *शेखावाटी क्षेत्र का सबसे लोकप्रिय एवं बहुप्रचलित लोकनृत्य, जो होली से पूर्व 'डांडा रोपण' से प्रारम्भ होकर होली के बाद तक चलता है।*
- *यह पुरुष प्रधान नृत्य हैं।*
- *गींदड़ नाचने वालों को 'गींदड़िया' तथा स्त्रियों का स्वांग करने वालों को 'गणगौर' कहा जाता है।*
- *नृत्य में विभिन्न प्रकार के स्वांग करते हैं जिसमें सेठ-सेठानी, दूल्हा दुल्हन, डाकिया-डाकिन, के स्वांग प्रमुख हैं।*

राजस्थान के लोक नृत्य एवं उसके प्रचलन क्षेत्र के सम्बन्ध में निम्नलिखित में कौनसा युग्म सही नहीं है ? (RAS 2012)

(a) गींदड़ नृत्य -शेखावाटी (b) ढोल नृत्य - जालौर
(c) बमरसिया नृत्य - बीकानेर (d) डांडिया नृत्य - मारवाड़

अभ्यास प्रश्न

1. राजस्थान के किस लोक वाद्य को ज्यूज हार्प भी कहा जाता है ?
(a) मोर चंग
(b) रावण हत्था
(c) कमायचा
(d) खड़ताल **(a)**

2. निम्नलिखित में से कौन सा तत् वाद्य नहीं है?
(a) रावण हत्था
(b) जंतर
(c) अलगोजा
(d) कामायचा **(c)**

3. मन्दिरों तथा राजाओं के महलों के मुख्य द्वार पर बजाए जाने वाला वाद्य यंत्र है?
(a) ढोल
(b) नौबत
(c) नगाड़ा
(d) ताशा **(b)**

4. राजस्थान के प्रसिद्ध पखावज वादक हैं?
(a) पं . रामनारायण
(b) पं . पुरुषोत्तम दास
(c) उस्ताद असद अली खां
(d) उस्ताद हिदायत खां **(b)**

5. कामायचा का संबंध किस जाति से है?
(a) चारण
(b) मांगणियार
(c) भाट
(d) ढोली **(b)**

6. पाबूजी तथा डूंगरजी के भोपे किस वाद्ययंत्र का प्रयोग करते हैं?
(a) रावणहत्था
(b) तंदूरा
(c) खड़ताल
(d) भपंग **(a)**

7. ऐसा लोकवाद्य जिसका निर्माण आधे कटे नारियल की कटोरी से होता है?
(a) रावणहत्था
(b) झांस
(c) रमझोल
(d) सारंगी **(a)**

8. घूमर नृत्य के समय कौनसे वाद्य यंत्रों की आवश्यकता होती है?
(a) सारंगी और चंग
(b) ढोलक और मंजीरा
(c) रावण हत्था और नगाड़ा
(d) डमरू और थाली **(b)**

9. मुहर्रम के अवसर पर प्रयोग में लिया जाने वाला प्रसिद्ध वाद्ययंत्र कौनसा है?
(a) नगाड़ा
(b) ताशा
(c) थाली
(d) चिमटा **(b)**

10. मारवाड़ के जोगियों द्वारा गोपीचंद भृतहरि , निहालदे आदि के ख्याल गाते समय किस वाद्य का प्रयोग किया जाता है?
(a) अलगोजा
(b) सारंगी
(c) तंदूरा
(d) खड़ताल **(b)**

- **राजस्थान के लोक नाट्य**

➢ **ख्याल**

- राजस्थान के लोक नाट्य की सबसे लोकप्रिय विधा ख्याल का प्रचलन 18वीं शताब्दी के प्रारम्भ में हो चुका था।
- ख्याल नाट्य का प्रमुख वाद्य यंत्र नगाड़ा और हारमोनियम होता है।
- लोकनाट्य के संवाद बोल कहलाते है।
- ख्यालों की विषय - वस्तु पौराणिक कथाओं से जुड़ी होती है ख्याल एक संगीत प्रधान लोक नाट्य है

❖ राजस्थान के लोक देवता :-

➢ राजस्थान के ग्रामीण अंचलों में चबूतरेनूमा बने हुए लोकदेवताओं के पूजा स्थल को 'देवरे' कहलाते हैं तो अलौकिक शक्ति द्वारा किसी कार्य को करना अथवा करवा देना 'पर्चा देना' कहलाता है।

➢ मारवाड़ के पंच पीर - (1) गोगाजी (2) पाबूजी (3) हड़बूजी (4) रामदेव जी (5) मेंहाजी।
पाबू, हड़बू, रामदे, मांगलिया मेंहा।
पाँचों पीर पधारजो गोगाजी गेहा।

क्षेत्रपाल राजस्थान की संस्कृति में एक महत्वपूर्ण पहलू रहा है (RAS 2015)
(a) ग्राम अधिकारी के रूप में
(b) ग्राम देवता के रूप में
(c) एक संत के रूप में
(d) एक उपासक के रूप में

➢ **गोगाजी चौहान**

- पंच पीरों में सर्वाधिक प्रमुख स्थान।
- जन्म - संवत् 1003 में, जन्म स्थान - ददरेवा (चूरू)।
- ये चौहान वंश के थे
- पिता - जेवरजी चौहान, माता - बाछल दे,
- पत्नी - कोलुमण्ड (फलौदी, जोधपुर) की राजकुमारी केलमदे (मेनलदे)।
- केलमदे की मृत्यु साँप के कांटने से हुई जिससे क्रोधित होकर गोगाजी ने अग्नि अनुष्ठान किया। जिसमें कई साँप जलकर भस्म हो गये फिर साँपों के मुखिया ने आकर उनके अनुष्ठान को रोककर केलमदे को जीवित करते हैं। तभी से गोगाजी नागों के देवता के रूप में पूजे जाते हैं।
- गोगाजी का अपने मौसेरे भाईयों अर्जन व सुर्जन के साथ जमीन जायदाद को लेकर झगड़ा था। अर्जन - सुर्जन ने मुस्लिम आक्रान्ताओं (महमूद गजनवी) की मदद से गोगाजी पर आक्रमण कर दिया। गोगाजी वीरतापूर्वक लड़कर शहीद हुए।
- युद्ध करते समय गोगाजी का सिर ददरेवा (चूरू) में गिरा इसलिए इसे शीर्ष मेडी (शीषमेडी) तथा धड़ नोहर (हनुमानगढ़) में गिरा इसलिए इसे धड़मेड़ी/धुरमेड़ी/गोगामेड़ी भी कहते हैं।
- बिना सिर के ही गोगाजी को युद्ध करते हुए देखकर महमूद गजनवी ने गोगाजी को जाहिर पीर (प्रत्यक्ष पीर) कहा।
- उत्तर प्रदेश में गोगाजी को जहर उतारने के कारण जहर पीर/जाहर पीर भी कहते हैं।
- गोगामेड़ी का निर्माण फिरोजशाह तुगलक ने करवाया।
- गोगामेड़ी के मुख्य द्वार पर बिस्मिल्लाह लिखा है तथा इसकी आकृति मकबरेनुमा है।
- गोगामेड़ी का वर्तमान स्वरूप बीकानेर के महाराजा गंगासिंह की देन है।
- प्रतिवर्ष गोगानवमी (भाद्रपद कृष्णा नवमी) को गोगाजी की याद में गोगामेड़ी, हनुमानगढ़ में भव्य मेला भरता है।
- गोगाजी की आराधना में श्रद्धालु सांकल नृत्य करते हैं।
- गोगामेड़ी में एक हिन्दू व एक मुस्लिम पुजारी है।
- प्रतीक चिह्न - सर्प।
- खेजड़ी के वृक्ष के नीचे गोगाजी का निवास स्थान माना जाता है।
- गोगाजी की ध्वजा सबसे बड़ी ध्वजा मानी जाती है।
- 'गोगाजी की ओल्डी' नाम से प्रसिद्ध गोगाजी का अन्य पूजा स्थल - साँचौर (जालौर)।
- गोगाजी से सम्बन्धित वाद्य यंत्र - डेरू।
- किसान वर्षा के बाद खेत जोतने से पहले हल व बैल को गोगाजी के नाम की राखी गोगा राखड़ी बांधते हैं।
- सवारी - नीली घोड़ी, गोगा बाप्पा नाम से भी प्रसिद्ध है।

➢ **पाबूजी राठौड़**

- जन्म - 1239 ई. में, जन्म स्थान - कोलुमण्ड गाँव (फलौदी, जोधपुर) में हुआ ।
- पिता - धाँधल जी राठौड़, माता - कमलादे
- पत्नी – फूलमदे/ सुपियार दे सोढ़ी।

- फूलमदे अमरकोट के राजा सूरजमल सोढ़ा की पुत्री थी।
- पाबूजी की घोड़ी- केसर कालमी (यह काले रंग की घोड़ी उन्हें देवल चारणी ने दी, जो जायल नागौर के काछेला चारण की पत्नी थी)।
- मारवाड़ में साण्डे (ऊँटनी) लाने का श्रेय पाबूजी को जाता है।
- पाबूजी 'ऊँटों के देवता', 'गौरक्षक देवता' तथा 'प्लेग रक्षक देवता' के रूप में प्रसिद्ध है।
- पाबूजी को 'लक्ष्मण का अवतार' माना जाता है।
- ऊंटों की पालक जाति राईका/रैबारी/देवासी के आराध्य देव पाबूजी हैं।
- पाबूजी की जीवनी 'पाबू प्रकाश' के रचयिता आशिया मोड़जी ।
- हरमल व चाँदा डेमा पाबूजी के रक्षक थे।
- माघ शुक्ला दशमी तथा भाद्रपद शुक्ला दशमी को कोलुमण्ड गाँव (फलौदी, जोधपुर) में पाबूजी का प्रसिद्ध मेला भरता है।
- पाबूजी के पवाड़े (गाथा गीत) प्रसिद्ध है, जो माठ वाद्य यंत्र के साथ गाये जाते हैं।
- प्रतीक चिह्न - भाला लिए हुए अश्वारोही तथा बायीं ओर झुकी हुई पाग।
- सन् 1276 ई. में जोधपुर के देचू गाँव में देवलचारणी की गायों को जींद राव खींची से छुड़ाते हुए पाबूजी वीर गति को प्राप्त हुए, पाबूजी की पत्नी उनके वस्त्रों के साथ सती हुई। इस युद्ध में पाबूजी के भाई बूड़ोजी भी शहीद हुए।
- पाबूजी के भतीजे व बूड़ोजी के पुत्र रूपनाथ जी ने जींदराव खींची को मारकर अपने पिता व चाचा की मृत्यु का बदला लिया। रूपनाथ जी को भी लोकदेवता के रूप में पूजते हैं। राजस्थान में रूपनाथ जी के प्रमुख मंदिर कोलुमण्ड (फलौदी, जोधपुर) तथा सिम्भूदड़ा (नोखा मण्डी, बीकानेर) में है। हिमाचल प्रदेश में रूपनाथ जी को बालकनाथ नाम से भी जाना जाता है।
- पाबूजी की फड़ नायक जाति के भील भोपे रावण हत्था वाद्य यंत्र के साथ बाँचते हैं।
- सर्वाधिक फड़ें तथा सर्वाधिक लोकप्रिय/प्रसिद्ध फड़ पाबूजी की फड़ है।
- रामदेवजी की फड़ कामड़ जाति के भोपे रावण हत्था वाद्य यंत्र के साथ बाँचते हैं।
- सबसे प्राचीन फड़, सबसे लम्बी फड़ तथा सर्वाधिक प्रसंगों वाली फड़ देवनारायण जी की फड़ है।
- भारत सरकार ने राजस्थान की जिस फड़ पर सर्वप्रथम डाक टिकट जारी किया वह देवनारायण जी की फड़ (2 सितम्बर, 1992 को 5 रु. का डाक टिकट) है।
- देवनारायण जी की फड़ गुर्जर जाति के कुँआरे भोपे जंतर वाद्य यंत्र के साथ बाँचते हैं।
- भैंसासुर की फड़ का वाचन नहीं होता है | यह **फड़** बावरी जाति में लोकप्रिय है। अपराध करने से पूर्व यह जाति इस **फड़** के दर्शन शगुन के रूप में करती है।
- रामदला-कृष्णदला की फड़ (पूर्वी राजस्थान में) एकमात्र ऐसी फड़ है जिसका वाचन दिन में होता है। इस **फड़** के **वाचन** में वाद्य यंत्र का प्रयोग नहीं **होता** है।

हड़बूजी

- मारवाड़ के पंचपीरों में से एक हड़बूजी के पिता का नाम- मेहाजी सांखला (भुंडेल, नागौर)।
- हड़बूजी बाबा रामदेवजी के मौसेरे भाई थे।
- गुरु - बालीनाथ।
- संकटकाल में हड़बूजी ने जोधपुर के राजा राव जोधा को तलवार भेंट की और राव जोधा ने इन्हें बेंगटी (फलौदी, जोधपुर) की जागीर प्रदान की।
- बेंगटी में इनका प्रमुख पूजा स्थल है।
- यहाँ हड़बूजी की गाड़ी (छकड़ा व ऊँट गाड़ी) की पूजा होती है।
- इस गाड़ी में हड़बूजी विकलांग गायों के लिए दूर-दूर से घास भरकर लाते थे।
- हड़बूजी शकुन शास्त्र के ज्ञाता थे।
- हड़बूजी की सवारी सियार मानी जाती है।

रामदेवजी

- रामसापीर, रुणेचा रा धणी व पीरां रा पीर नाम से प्रसिद्ध हैं।
- रामदेव जी को कृष्ण का तथा उनके बड़े भाई बीरमदेव को बलराम का अवतार माना जाता है।
- पिता का नाम- अजमलजी तंवर, माता-मैणा दे, पत्नी-नेतल दे (नेतल दे अमरकोट के राजा दल्लेसिंह सोढा की पुत्री थी।)
- लोकमान्यता के अनुसार रामदेवजी का जन्म उंडूकाश्मीर गाँव (शिव-तहसील, बाड़मेर) में भाद्रपद शुक्ला द्वितीया को हुआ।
- समाधि- रुणेचा (जैसलमेर) में रामसरोवर की पाल पर भाद्रपद शुक्ला दशमी को ली।
- रामदेवजी के लिए नियत समाधि स्थल पर उनकी मुँह बोली बहिन डाली बाई ने पहले समाधि ली।
- रामदेवजी की सगी बहिनें - लाछा बाई, सुगना बाई।
- रामसापीर उपनाम से प्रसिद्ध बाबा रामदेवजी ने अपने जीवन काल में कई परचे (चमत्कार) दिखाये। उन्होंने मक्का से पधारे पंचपीरों को भोजन कराते समय उनका कटोरा प्रस्तुत

अध्याय – 2

प्रमुख भू – आकृतिक प्रदेश एवं उनकी विशेषताएं

नोटः- *प्रिय पाठकों जैसा कि आपको ज्ञात है कि राजस्थान क्षेत्रफल की दृष्टि से भारत का सबसे बड़ा राज्य है। इस विशाल राज्य में रेगिस्तान, नदियाँ, पर्वत एवं पहाडियाँ, पठार अलग - अलग क्षेत्रों में पाये जाते है । इनकी वजह से राजस्थान को चार भौतिक प्रदेशों में बाँटा गया है-*

1. *पश्चिमी मरुस्थलीय प्रदेश – वह क्षेत्र जहाँ पर रेगिस्तान पाया जाता हैं*
2. *अरावली पर्वतमाला - वह क्षेत्र जहाँ पर अरावली पर्वतमाला का विस्तार है।*
3. *पूर्वी मैदानी प्रदेश- वह क्षेत्र जहाँ पर अधिकांश **दोमट व जलोढ़ मिट्टी** पाई जाती हैं*
4. *दक्षिणी - पूर्वी पठारी प्रदेश - वह क्षेत्र जहाँ पर अधिकांश मात्रा में **काली मिट्टी** पाई जाती है, इस क्षेत्र को **हाड़ौती का पठार** भी कहते है।*

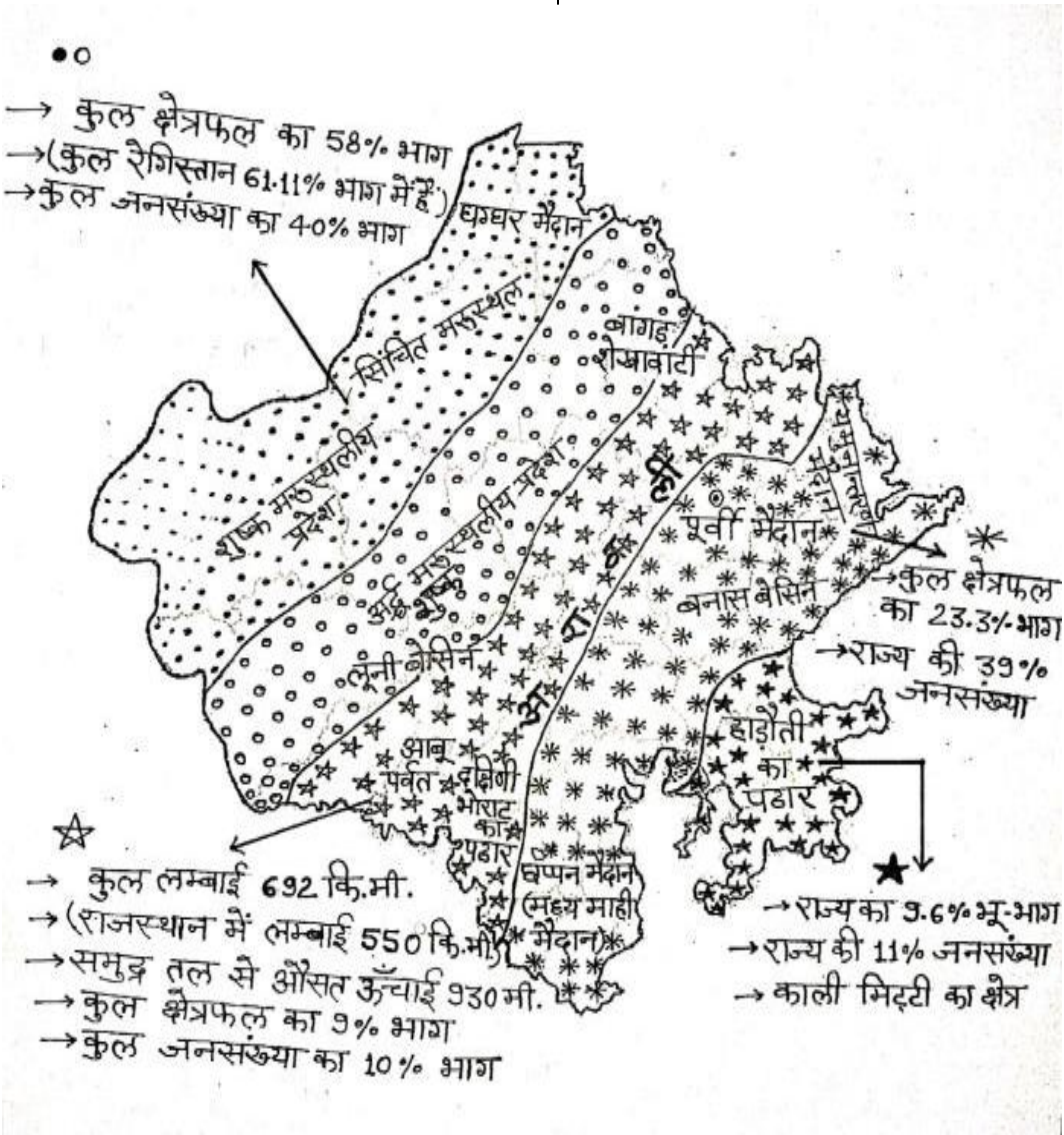

प्रिय छात्रों, इन चारों प्रदेशों का विस्तृत वर्णन इस प्रकार है-

- **पश्चिमी मरुस्थलीय प्रदेशः-**
  जैसा कि पहले ही बताया जा चुका है कि राजस्थान का पश्चिमी मरुस्थलीय क्षेत्र टेथिस सागर का अवशेष है, और अरावली क्षेत्र गोंडवाना लैंड का हिस्सा है।
  पश्चिमी मरुस्थलीय प्रदेश का सामान्य परिचय :-
  वर्तमान में रेगिस्तान का विस्तार राज्य के कुल 61.11 प्रतिशत हिस्से पर है।
  नोटः- पहले ये क्षेत्र केवल 58 प्रतिशत भाग पर ही सीमित था, लेकिन वर्तमान में अरावली पर्वतमाला के कटी – फटी होने के कारण मरुस्थल का विस्तार पश्चिम से पूर्व की ओर बढ़ रहा है।
  अरावली पर्वतमाला के पश्चिम में कुल 12 जिले स्थित हैं, उनमें से **12 जिलों में रेगिस्तान का विस्तार** है । यह जिले निम्न प्रकार है-

1. बीकानेर संभाग - बीकानेर, चुरु, हनुमानगढ़, श्रीगंगानगर
2. जोधपुर संभाग - जोधुपर, जैसलमेर, जालौर, बाड़मेर, पाली (अपवाद- सिरोही)
3. शेखावाटी क्षेत्र - सीकर, झुंझुनू
4. अजमेर संभाग – नागौर

नोटः – राज्य के सिरोही जिले में मरुस्थल का विस्तार नहीं है अर्थात् अरावली के पश्चिम में स्थित **13 जिलों में से सिरोही एक मात्र ऐसा** जिला है, जो मरुस्थलीय जिलों की श्रेणी में शामिल नहीं है।

- **थार का रेगिस्तान** राजस्थान के उत्तर-पश्चिम भाग और पाकिस्तान में सिंध तथा पंजाब तक फैला है।
- यह **उत्तर – पश्चिम में 644 किमी. लम्बा और 360 किमी. चौड़ा है** ।
- इस का सामान्य ढ़ाल **उत्तर – पूर्व से दक्षिण – पश्चिम** की ओर है ।
- मरुस्थल का **ऊँचा उठा हुआ उत्तर -पूर्वी भाग 'थली' तथा दक्षिण-पश्चिम भाग नीचे का 'तली'** 'कहलाता है।
  इस मरुस्थलीय क्षेत्र में राज्य की कुल **जनसंख्या का लगभग 40** प्रतिशत हिस्सा निवास करता है।
  यह **विश्व का सबसे अधिक जनसंख्या वाला मरुस्थल** है तथा इसके अलावा यह विश्व में सर्वाधिक जैव विविधता वाला मरुस्थल भी है।

प्रश्न.1 भारत के थार मरुस्थल का कितना भाग राजस्थान में है?

A. 40 प्रतिशत **B. 60 प्रतिशत**
C. 80 प्रतिशत **D. 90 प्रतिशत**

उत्तर - B

- थार के मरुस्थल की सर्वाधिक महत्त्वपूर्ण विशेषताएँ हैं, कि यह **विश्व का एक मात्र** ऐसा मरुस्थल है, जिसके निर्माण में **दक्षिण पश्चिम मानसूनी हवाओं का मुख्य योगदान** है।
- थार का मरुस्थल भारतीय उपमहाद्वीप में ऋतु चक्र को भी नियंत्रित करता है ।
- ग्रीष्म काल में तेज गर्मी के कारण इस प्रदेश में न्यून वायु दाब केन्द्र विकसित हो जाता है। जो दक्षिण - पश्चिमी मानसूनी हवाओं को आकर्षित करता है। यह हवायें सम्पूर्ण प्रायद्वीप में वर्षा करती है ।
- भारतीय उपमहाद्वीप में मानसून को आकर्षित करने में इस मरुस्थल की उपस्थिति अत्यन्त महत्तवपूर्ण है।
  इस क्षेत्र में शुष्क एवं अत्यंत विषम जलवायु पाई जाती है और तापमान गर्मियों में अत्यधिक (49° C तक) तथा सर्दियों में न्यूनतम (3° C तक) रहता है।
  आँकल जीवाश्म पार्क, जलोद्भिद तलछट व लिग्नाइट, खनिज तेल इत्यादि से इस तथ्य की पुष्ठि होती है, कि **थार का मरुस्थल 'पर्माकार्बोनिफेरस युग'** में टेथिस सागर का हिस्सा था।

नोटः-मरुस्थलीकरण का मूल कारण :-
मरुस्थलीकरण की समस्या सम्पूर्ण विश्व में व्याप्त है। विश्व की कुल जनसंख्या का छठवाँ हिस्सा मरुस्थलीकरण की समस्या से प्रभावित है।
सन् 1952 में "Symposia on Indian Desert" का आयोजन किया गया जिसमें थार के मरुस्थल की उत्पत्ति पूर्व में इसका विस्तार आदि पर विस्तृत चर्चा की गई है।

क्या होता है मरुस्थलीकरण?

- उपजाऊ एवं अमरुस्थलीय भूमि का क्रमिक रूप शुष्क प्रदेश अथवा मरुस्थल में परिवर्तित हो जाने की प्रक्रिया ही मरुस्थलीकरण है ।
- मरुस्थलीकरण प्रकृति की परिघटना है जो **जलवायवीय परिवर्तन व दोष पूर्ण भूमि उपयोग के कारण होती है।**
- यह क्रम वृद्धि परिघटना है , जिसमें मानव द्वारा भूमि उपयोग पर दबाव के कारण परिवर्तन होने से परितंत्र का अवनयन होता है।

मरुस्थलीकरण का सबसे महत्वपूर्ण कारण-
भूमि का अविवेकी उपयोग
पशुचारन
निरंतर वर्षा में कमी
संसाधनों का अति दोहन
जनसंख्या वृद्धि इत्यादि।

अचलगढ़ पर्वत श्रृंखला	-	सिरोही
लोहार्गल पर्वत चोटी	-	झुंझुनूं
भोजगढ़ पर्वत चोटी	-	झुंझुनूं
अधवाड़ा पर्वत चोटी	-	झुंझुनूं
हर्ष पहाड़ी	-	सीकर
कमलनाथ पर्वत चोटी	-	सीकर
मालखेत की पहाड़ियाँ	-	सीकर
रघुनाथगढ़ पहाड़ियाँ	-	सीकर
कुंभलगढ़ पहाड़ियाँ	-	राजसमंद
भैराज चोटी	-	अलवर
खो पहाड़ी	-	जयपुर
बैराठ पहाड़ी	-	जयपुर
बिलाली पहाड़ी	-	जयपुर
तारागढ़ पहाड़ी	-	अजमेर
टॉडगढ़ पहाड़	-	अजमेर
बाबाई पहाड़ी	-	जयपुर

प्रश्न – 4. सूची - i को सूची - ii से सुमेलित कीजिए तथा सही उत्तर का चयन नीचे दिये गये कूट से कीजिए - (RAS - 2018)

सूची - (i) (जिले)	**सूची - (ii) (पर्वत)**
a. जालौर	**(i) बरवाड़ा**
b. जयपुर	**(ii) झारोला**
c. अलवर	**(iii) रघुनाथगढ़**
d. सीकर	**(iv) भानगढ़**

	(a)	(b)	(c)	(d)
(A)	(ii)	(i)	(iv)	(iii)
(B)	(i)	(ii)	(iii)	(iv)
(C)	(iv)	(iii)	(ii)	(i)
(D)	(iii)	(ii)	(i)	(iv)

उत्तर - A

प्रश्न – 5. निम्नलिखित में से कौनसा समूह राजस्थान की पर्वत चोटियों का उनकी ऊँचाई के अनुसार सही अवरोही क्रम है? (RAS - 2016)

A. देलवाड़ा, सज्जनगढ़, जरगा, तारागढ़
B. सेर, जरगा, सज्जनगढ़, तारागढ़
C. जरगा, सेर, सज्जनगढ़, तारागढ़
D. जरगा, देलवाड़ा, तारागढ़, सज्जनगढ़

उत्तर - B

पूर्वी मैंदानी भाग

- पूर्वी मैंदानी भाग के बारे में जैसा कि आपको मालूम है, राजस्थान में स्थित अरावली पर्वतमाला के पूर्व में नदियों के प्रवाह वाला क्षेत्र है।
- जब नदियाँ एक स्थान से दूसरे स्थान पर जल का प्रवाह करती हैं तो अपने साथ मिट्टी, कंकड़ पत्थर, इत्यादि लेकर जाती हैं और धीमी प्रभाव वाले क्षेत्र में जमा कर देती हैं और इसी प्रकार इन सभी से मैंदानी क्षेत्र का निर्माण होता है ।
- इसी प्रकार **अरावली के पूर्व में नदियों के प्रवाह के द्वारा लाई गई मिट्टी से निर्मित मैंदानी भाग को "पूर्वी मैंदानी भाग" के नाम** से जाना जाता है इसलिए इस क्षेत्र में **दोमट /जलोढ़ / कछारी मिट्टी अधिकांश मात्रा में पाई जाती है। इस पूर्वी मैंदानी** क्षेत्र में राज्य के निम्नलिखित जिले आते हैं -

जयपुर, दौसा, भीलवाड़ा, करौली, प्रतापगढ़, बाँसवाड़ा, डूंगरपुर, अजमेर, चित्तौड़गढ़, टोंक, सवाई माधोपुर, धौलपुर, भरतपुर, अलवर।

पूर्वी मैंदानी भाग राज्य के कुल हिस्से का **23.3% भाग** बनाता है अर्थात् कुल राजस्थान के क्षेत्रफल के **23.3%** हिस्से पर पूर्वी मैंदानी भाग है जिस पर राज्य की **कुल जनसंख्या का 39% हिस्सा निवास करता है ।**
चूंकि **जलोढ़ मिट्टी कृषि के लिए सबसे ज्यादा उपजाऊ** होती है इसलिए पूर्वी मैंदानी भाग में निवास करने वाली 39% जनसंख्या में से अधिकांश लोगों का मुख्य व्यवसाय कृषि है इस क्षेत्र में **60 सेमी० से 100 सेमी० मीटर तक वर्षा** होती है।
अध्ययन की दृष्टि से पूर्वी मैंदानी भागों को तीन उप भागों में बाँटा गया है ।

1. चम्बल बेसिन **(चंबल नदी का प्रवाह क्षेत्र -** कोटा, बूंदी, झालावाड़, धौलपुर, करौली)
2. बनास व बाणगंगा बेसिन (**बनास नदी का प्रवाह क्षेत्र** - भीलवाड़ा, टोंक, अजमेर, सवाई माधोपुर)
3. छप्पन बेसिन (**माही नदी का प्रवाह क्षेत्र -** बाँसवाड़ा, प्रतापगढ़, डूंगरपुर)

चंबल बेसिन -
चंबल नदी का प्रवाह क्षेत्र कोटा, बूंदी, झालावाड़, धौलपुर,

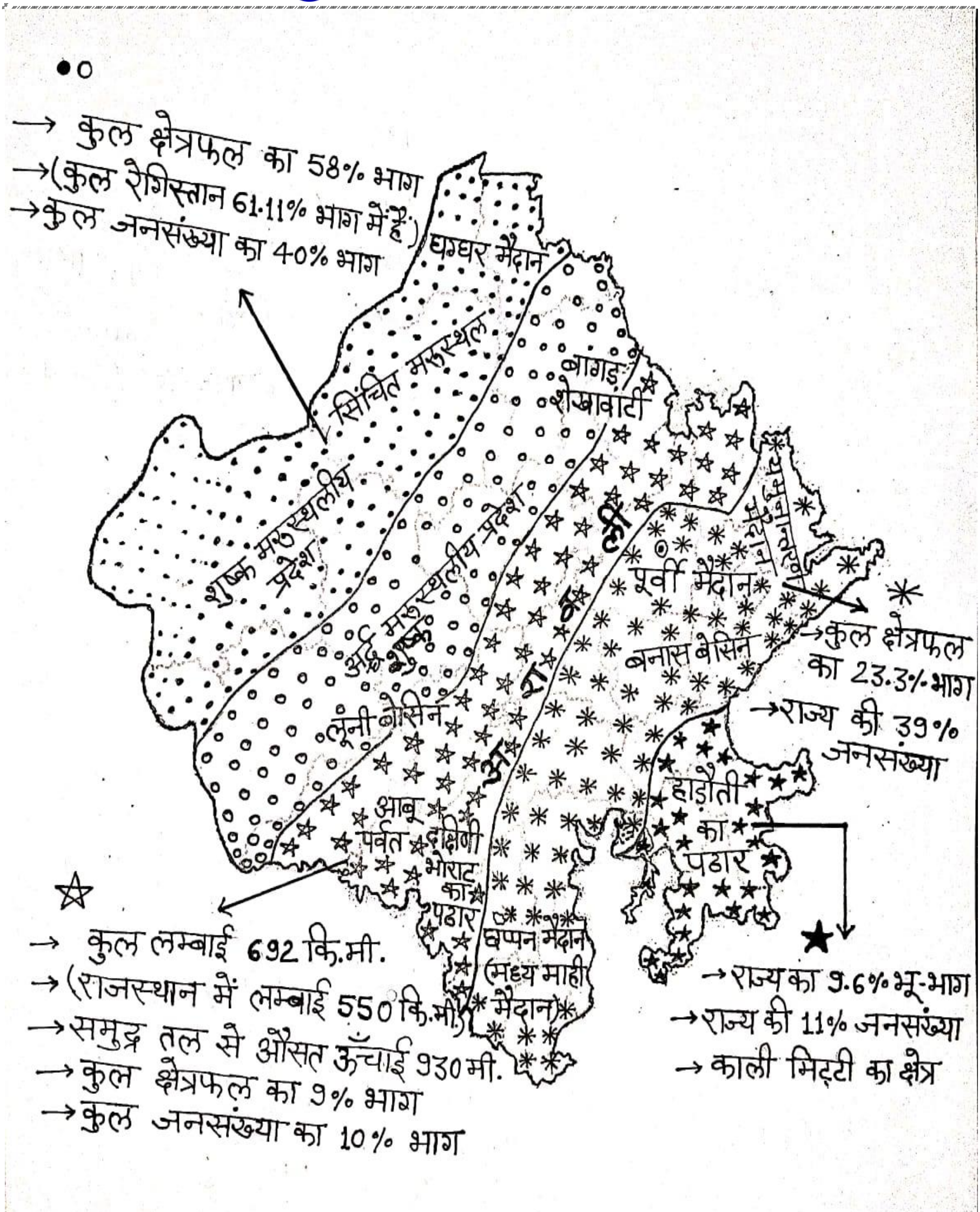

करौली, सवाई माधोपुर हैं। इस प्रवाहित क्षेत्र को चंबल बेसिन के नाम से जाना जाता है। इस क्षेत्र में चंबल के साथ इसकी सहायक नदियाँ भी बहती है

नोट :- भारत में सर्वाधिक उत्खात स्थलाकृति चंबल नदी के आस - पास मिलती है *उत्खात स्थलाकृति से आशय ऐसी भूमि से हैं* ***जो कृषि योग्य नहीं है।***
इसी क्षेत्र में सर्वाधिक बीहड़ पाए जाते हैं

6. राजस्थान के कौन से जिले 'आर्द्र दक्षिणी-पूर्वी मैदान' 'कृषि जलवायु प्रदेश के अन्तर्गत आते हैं?

a. डूंगरपुर तथा बांसवाड़ा
b. डूंगरपुर, बाँसवाड़ा तथा प्रतापगढ़
c. राजसमन्द, भीलवाड़ा तथा चित्तौगढ़
d. कोटा, बूंदी, बारां,झालावाड़, सवाई माधोपुर

उत्तर - (d)

7. राज्य का "आर्द्र जिला" कहलाता है-

a. उदयपुर b. झालावाड़
c. बाँसवाड़ा d. चित्तौड़गढ़

उत्तर - (b)

8. थार्नवेट के CAw में राजस्थान के कौनसे क्षेत्र सम्मिलित है-

a. उत्तरी-पश्चिमी
b. दक्षिणी और दक्षिणी पूर्वी
c. उत्तर-पूर्वी
d. दक्षिणी -पश्चिमी और मध्य

उत्तर - (d)

9. राजस्थान की निम्न में से कौन सी फसल मावठ से लाभान्वित नहीं होती हैं?

a. गेहूँ b. चना
c. सरसों d. कपास

उत्तर - (d)

10. राजस्थान को दो भागों में बांटने वाली "सम वर्षा" रेखा है -

a. 25 सेमी. की b. 50 सेमी. की
c. 100 सेमी. की d. 150 सेमी. की

उत्तर - (b)

अध्याय – 4

प्रमुख नदियाँ एवं झीलें

अपवाह तंत्र -

- जब नदी एक स्थान से दूसरे स्थान पर जल का प्रवाह करती हैं, तो उसे अपवाह तंत्र कहते हैं ।
- अपवाह तंत्र में नदियाँ एवं उसकी सहायक नदियाँ शामिल होती हैं।
- जैसे गंगा और उसकी सहायक नदियाँ मिल कर एक अपवाह तंत्र बनाती हैं उसी प्रकार सिंधु और उसकी सहायक नदियाँ (झेलम, रावी, व्यास, चिनाब) मिलकर एक अपवाह तंत्र बनाती है।
- इसी तरह ब्रह्मपुत्र नदी और उसकी सहायक नदियाँ भी अपवाह तंत्र बनाती है।
- भारत की सबसे लंबी नदी गंगा है तथा सबसे बड़ा अपवाह तंत्र वाली नदी ब्रह्मपुत्र है।

अब हम अध्ययन करेंगे राजस्थान के अपवाह तंत्र के बारे में।

- राजस्थान में कई नदियाँ हैं जैसे लूनी, माही, बनास, चंबल । इसके अलावा यहाँ पर स्थित कई झीलें भी इस अपवाह तंत्र में शामिल होती हैं ।
- प्रिय छात्रों जैसा कि आपको मालूम है राजस्थान में **अरावली पर्वतमाला** स्थित है, यह राजस्थान के लगभग बीच में स्थित है इसलिए यह **राज्य की नदियों का स्पष्ट रूप से दो भागों** में विभाजित करती है।
- **इसके पूर्व में बहने वाली नदियाँ अपना जल बंगाल की खाड़ी में** तथा इसके **पश्चिम में बहने वाली नदियाँ अपना जल अरब सागर** में लेकर जाती है।
- राजस्थान के अपवाह तंत्र को हम दो भागों में विभक्त करेंगे फिर उनके अन्य क्रमशः 4 एवं 3 उप भाग होंगे -

1. क्षेत्र के आधार पर वर्गीकरण
2. अपवाह के आधार पर वर्गीकरण

1. क्षेत्र के आधार पर वर्गीकरण को चार भागों में बाँटा गया है -

(अ) उत्तरी व पश्चिमी राजस्थान- इस तंत्र में लूनी, जवाई, सूकड़ी, बांडी ,सागी जोजड़ी घग्घर, कातली नदियाँ शामिल होती है ।

(ब) दक्षिण व पश्चिमी राजस्थान - इसमें पश्चिमी बनास, साबरमती, वाकल, व सेई नदियाँ शामिल होती है

(स) दक्षिणी राजस्थान - इसमें माही, सोम, जाखम, अनास मोरेन नदियाँ शामिल होती हैं ।

(द) दक्षिण - पूर्वी राजस्थान - इसमें चंबल, कुनु, पार्वती, कालीसिंध, कुराल, आहू, नेवज, परवन, मेज, गंभीरी, छोटी कालीसिंध, ढीला, खारी, माशी, कालीसिल, मोरेल, डाई, सोहादरा आदि नदियाँ शामिल होती हैं।

2. अपवाह के आधार पर वर्गीकरण - प्रिय छात्रों नदियों के विभाजन का सबसे अच्छा तरीका है और इसी आधार पर नदियों को तीन भागों में बाँटा गया है

(अ) बंगाल की खाड़ी में गिरने वाली नदियाँ

इस अपवाह तंत्र में प्रमुख नदियाँ शामिल होती है । जैसे **चंबल, बनास, कालीसिंध, पार्वती, बाण गंगा, खारी, बेड़च, गंभीरी आदि।** ये नदियाँ अरावली के पूर्व में बहती हैं इनमें कुछ नदियों का उद्गम स्थल अरावली का पूर्वी घाट तथा कुछ का मध्यप्रदेश का विंध्याचल पर्वत है यह सभी नदियाँ अपना जल यमुना नदी के माध्यम से बंगाल की खाड़ी मेंले जाती हैं।

(ब) अरब सागर में गिरने वाली नदियाँ -

इस अपवाह तंत्र में शामिल प्रमुख नदियाँ है । जैसे **माही, सोम, जाखम, साबरमती, पश्चिमी बनास, लूणी, इत्यादि । पश्चिमी बनास, लूनी गुजरात के कच्छ के रण में विलुप्त हो जाती हैं,** ये सभी नदियाँ अरब सागर की ओर अपना जल लेकर जाती हैं।

(स) अंतः प्रवाह वाली नदियाँ -

बंगाल की खाड़ी में गिरने वाली नदियाँ और अरब सागर में गिरने वाली नदियों के अलावा कुछ छोटी नदियाँ भी हैं जो कुछ दूरी तक प्रभावी होकर राज्य में अपने क्षेत्र में विलुप्त हो जाती हैं तथा उनका जल समुद्र तक नहीं जा पाता है, इसलिए इन्हें आंतरिक प्रवाह वाली नदियाँ कहा जाता है, जैसे :- **काकनी, कांतली, साबी घग्घर, मेंथा, बांडी, रूपनगढ़ इत्यादि।**

राजस्थान राज्य की नदियों से संबंधित महत्वपूर्ण तथ्य जो की परीक्षा की दृष्टि से महत्वपूर्ण है -

राजस्थान की अधिकांश नदियों का प्रवाह क्षेत्र अरावली पर्वत की पूर्व में है ।

- **राजस्थान में चंबल तथा माही के अलावा अन्य कोई नदी बारह मासी नहीं है।**
- **राज्य में चूरू व बीकानेर दो ऐसे जिले हैं जहाँ कोई नदी नहीं है ।**
- श्रीगंगानगर में पृथक् से कोई नदी नहीं है लेकिन वर्षा होने पर घग्घर नदी का बाढ़ का पानी सूरतगढ़, अनूपगढ़ तक चला जाता है ।
- राज्य के 60% भू-भाग पर आंतरिक जल प्रवाह का विस्तार है।
- राज्य में सबसे अधिक सतही जल चंबल नदी में उपलब्ध है।
- **राज्य में बनास नदी का जल ग्रहण क्षेत्र सबसे बड़ा है।**
- **राज्य में सर्वाधिक नदियाँ कोटा संभाग में** बहती हैं ।
- **राज्य की सबसे बड़ी नदी चंबल है।**
- पश्चिमी राजस्थान की जीवन रेखा इंदिरा गांधी नहर परियोजना को कहते हैं ।
- मारवाड़ की जीवन रेखा लूनी नदी को कहते हैं ।
- बीकानेर की जीवन रेखा कंवर सेन लिफ्ट परियोजना को कहते हैं ।
- राजसमंद की जीवन रेखा नंद समंद झील कहलाती है ।
- भरतपुर की जीवन रेखा मोती झील है ।
- गुजरात की जीवन रेखा नर्मदा परियोजना है ।
- जमशेदपुर की जीवन रेखा स्वर्ण रेखा नदी को कहा जाता है इस नदी पर हुंडरू जल प्रपात स्थित है ।
- आदिवासियों की या दक्षिणी राजस्थान की जीवन रेखा माही नदी को कहा जाता है ।
- पूरे राज्य में बहने वाली सबसे बड़ी नदी बनास है ।
- भारत सरकार द्वारा राजस्थान भूमिगत जल बोर्ड की स्थापना 1955 में की गई थी । इस बोर्ड का नियंत्रण राजस्थान सरकार को सौंपा गया था। 1971 से इस बोर्ड को भूजल विभाग के नाम से जाना जाता है इसका कार्यालय जोधपुर में है ।
- पूर्णत : राजस्थान में बहने वाली सबसे लंबी नदी तथा सर्वाधिक जल ग्रहण क्षेत्र वाली नदी बनास है ।
- चंबल नदी पर भैंसरोड़गढ़ (चित्तौड़गढ़) के निकट चूलिया जल प्रपात तथा मांगली नदी पर बूंदी में "भीमलत प्रपात" है।
- सर्वाधिक जिलों में बहने वाली नदियाँ चंबल, बनास, लूणी हैं, जो कि प्रत्येक नदी 6 जिलों में बहती है ।
- **अंतर्राज्य सीमा बनाने वाली एक मात्र नदी है चंबल,** जो कि राजस्थान व मध्यप्रदेश की सीमा बनाती है।
- टोंक जिले की राजमहल नामक जगह पर बनास नदी, डाई नदी तथा खारी नदी के द्वारा त्रिवेणी संगम बनाया जाता है। यहाँ शिव एवं सूर्य की संयुक्त प्रतिमा स्थित है, जो मार्तंड भैरव मंदिर या देवनारायण मंदिर के नाम से जाना जाता है यहाँ नारायण सागर बाँध स्थित है।

प्रिय छात्रों अब हम प्रत्येक अपवाह तंत्र को विस्तृत रूप से समझते हैं । सबसे पहले हम बंगाल की खाड़ी की ओर चले जाने वाली नदियों का अध्ययन करेंगे -

1. **चंबल नदी –**प्रिय छात्रों चंबल नदी के बारे में हम समझते हैं कि क्या है इसकी महत्वपूर्ण विशेषताएं –

चम्बल नदी एवं इसकी सहायक नदियाँ

- राजस्थान की कामधेनु
- प्राचीन नाम – चर्मण्वती
- कुल लम्बाई लगभग 965 किमी.
- राजस्थान व मध्यप्रदेश की सीमा पर 241 KM लम्बी
- राजस्थान के अन्दर 135 KM लम्बी
- राजस्थान में कुल लम्बाई (241+135) = 376 किमी.

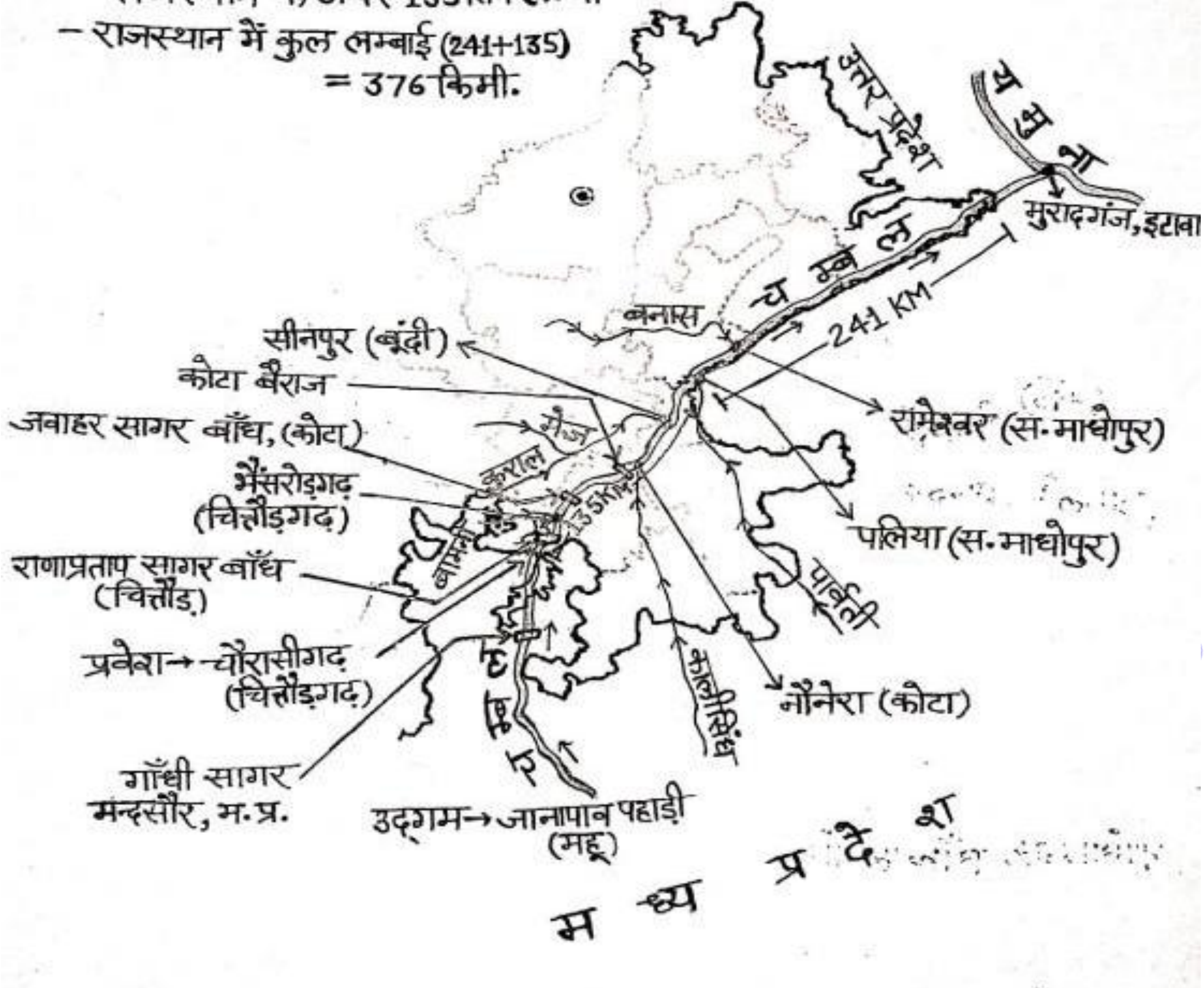

- चंबल नदी राजस्थान की एक मात्र ऐसी नदी है जो प्राकृतिक अंतर्राज्य सीमा निर्धारित करती है इस नदी को अन्य नामों से भी जाना जाता है इसके अन्य नाम है चर्मणवती नदी, कामधेनु नदी, बारह मासी नदी, नित्य वाहिनी नदी।
- इस नदी की **कुल लंबाई लगभग 966 किलो मीटर है। यह नदी मध्यप्रदेश, राजस्थान व उत्तरप्रदेश अर्थात् 3 राज्यों में बहती है** यह नदी मध्यप्रदेश में लगभग 335 किलो मीटर, राजस्थान में लगभग 135 किलो मीटर, उत्तरप्रदेश में लगभग 275 किलो मीटर बहती है ।
- यह नदी राजस्थान, मध्यप्रदेश तथा उत्तरप्रदेश के मध्य लगभग 241 किलो मीटर की अंतर्राज्य सीमा भी बनाती है।
- इस नदी का **उद्गम स्थल मध्यप्रदेश के महु के निकट विंध्याचल पर्वतमाला** में स्थित 616 मीटर ऊंची "जानापाओ की पहाड़ी" से होता है ।
- मध्यप्रदेश में मंदसौर जिला में स्थित रामपुरा भानपुरा के पठारों में स्थित इस नदी का सबसे बड़ा बाँध **"गांधी सागर बाँध"** बना हुआ है।
- यह नदी राजस्थान में सर्वप्रथम चित्तौड़गढ़ जिले में स्थित चौरासीगढ़ नामक स्थान से प्रवेश करती है।
- इस नदी पर भैंसरोड़गढ़ के समीप सबसे बड़ा सबसे ऊंचा जल प्रपात बना है जिसे चूलिया जल प्रपात के नाम से जानते हैं।

INFUSION NOTES
WHEN ONLY THE BEST WILL DO

प्रिय दोस्तों, अब तक हमारे नोट्स में से अन्य परीक्षाओं में आये हुए प्रश्नों के परिणाम देखने के लिए क्लिक करें -

RAS PRE. - https://www.youtube.com/watch?v=p3_i-3qfDy8&t=1253s

Rajasthan CET Gradu. Level - https://youtu.be/gPqDNlc6UR0

Rajasthan CET 12th Level - https://youtu.be/oCa-CoTFu4A

RPSC EO / RO - https://youtu.be/b9PKjl4nSxE

VDO PRE. - https://www.youtube.com/watch?v=gXdAk856WI8&t=202s

Patwari - https://www.youtube.com/watch?v=X6mKGdtXyu4&t=2s

PTI 3rd grade - https://www.youtube.com/watch?v=iA_MemKKgEk&t=5s

SSC GD - 2021 - https://youtu.be/2gzzfJyt6vI

EXAM (परीक्षा)	DATE	हमारे नोट्स में से आये हुए प्रश्नों की संख्या
RAS PRE. 2021	27 अक्तूबर	74 प्रश्न आये
SSC GD 2021	16 नवम्बर	68 (100 में से)
SSC GD 2021	08 दिसम्बर	67 (100 में से)
RPSC EO/RO	14 मई (Ist Shift)	95 (120 में से)
राजस्थान S.I. 2021	14 सितम्बर	119 (200 में से)
राजस्थान S.I. 2021	15 सितम्बर	126 (200 में से)
RAJASTHAN PATWARI 2021	23 अक्तूबर (Ist शिफ्ट)	79 (150 में से)

FREE SAMPLE
INFUSION NOTES WHEN ONLY THE BEST WILL DO

RAJASTHAN PATWARI 2021	23 अक्तूबर (2nd शिफ्ट)	103 (150 में से)
RAJASTHAN PATWARI 2021	24 अक्तूबर (2nd शिफ्ट)	91 (150 में से)
RAJASTHAN VDO 2021	27 दिसंबर (1st शिफ्ट)	59 (100 में से)
RAJASTHAN VDO 2021	27 दिसंबर (2nd शिफ्ट)	61 (100 में से)
RAJASTHAN VDO 2021	28 दिसंबर (2nd शिफ्ट)	57 (100 में से)
U.P. SI 2021	14 नवम्बर 2021 1st शिफ्ट	91 (160 में से)
U.P. SI 2021	21नवम्बर2021 (1st शिफ्ट)	89 (160 में से)
Raj. CET Graduation level	07 January 2023 (1st शिफ्ट)	96 (150 में से)
Raj. CET 12th level	04 February 2023 (1st शिफ्ट)	98 (150 में से)

& Many More Exams like UPSC, SSC, Bank Etc.

नोट्स खरीदने के लिए इन लिंक पर क्लिक करें

Whatsapp करें – https://wa.link/3ewvb9

Online order करें – https://shorturl.at/dlvHQ

Call करें - 9887809083

FREE SAMPLE
INFUSION NOTES WHEN ONLY THE BEST WILL DO